301hi25

25

हिंदी कविता की विकास यात्रा

टिप्पणी

आप जानते हैं कविता का संबंध व्यक्ति के हृदय से माना गया है। कविता दिल से निकलती है और दिल तक पहुँचती हैं। अभी तक आपने इस पाठ्यक्रम की सभी कविताएँ तो पढ़ ही ली हैं। – रैदास, तुलसी, मीराँ आदि। आप सोच रहे होंगे कि रैदास से पहला पाठ आरंभ हो रहा है, इसलिए कविता की यात्रा भी रैदास से ही शुरू हुई होगी। एक प्रकार से आप ठीक सोच रहे हैं। कम-से-कम इस स्तर पर इस पाठ्यक्रम में कविता का प्रारंभ रैदास जी से ही हुआ है। परंतु क्या हिंदी कविता भी यहीं से शुरू हुई तो इसका उत्तर है–नहीं। हिंदी कविता की विकास यात्रा प्रारंभ हुई 1000 ईसवी से। आप जानते हैं भाषा तो बहता नीर है। कविता का इतिहास बहुत पुराना है – जैसे-जैसे समाज बदला, सामाजिक परिस्थितियाँ बदलीं, वैसे-वैसे कविता की भाषा और स्वरूप भी बदलता गया। आइए, पढ़ते हैं कि कविता कहाँ से चली और कहाँ तक पहुँची। इसकी यात्रा में कौन-कौन से पड़ाव आए।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल तथा आधुनिक काल की कविताओं की विषय-वस्तु तथा स्वरूप पर विचार कर सकेंगे;
- कविता किस प्रकार से अपने युग से प्रभावित होती है और युग को प्रभावित करती है, इसे बता सकेंगे;
- हिंदी काव्य-विकास के विभिन्न चरणों में भाषा के प्रयोग को समझा सकेंगे;
- हिंदी साहित्य में पुनर्जागरण का महत्त्व समझा सकेंगे;
- आधुनिक काल की विभिन्न काव्य-विधाओं की विशेषताएँ बता सकेंगे।

क्रियाकलाप

किताबों से खोजकर विद्यापति, सूरदास, बिहारीलाल, भारतेंदु हरिश्चंद्र के कृष्ण-भक्ति

टिप्पणी

सन् 1000 ई. से हिंदी काव्य का प्रारंभ होता है।

से संबंधित पदों-दोहों को अपनी नोटबुक पर उतारिए और उन्हें पढ़ कर यह खोजने का प्रयत्न कीजिए कि उनकी भाषा में क्या अंतर है? जो अंतर आपकी समझ में आए, उन्हें अपनी नोटबुक में दर्ज़ करके अपने शिक्षण-केंद्र के शिक्षक को दिखलाइए।

25.1 आइए समझें

हिंदी कविता की विकास यात्रा

हिंदी साहित्य का आरंभ सन् 1000 ई० से माना जाता है। भाषा, समाज, संस्कृति और साहित्य के बदलाव की कोई निश्चित तारीख नहीं होती। ये परिवर्तन धीरे-धीरे होते हैं। इस कारण कुछ विद्वान इस सीमा रेखा को सन् 1000 से आगे या पीछे तक भी ले जाते हैं। हिंदी साहित्य के इन 1000 वर्षों में भाषा के रूप तथा साहित्यिक प्रवृत्तियों में अनेक परिवर्तन हुए हैं। उन परिवर्तनों पर विचार करने के लिए हम प्रायः समूचे साहित्य को चार मोटे-मोटे भागों में विभाजित करते हैं। ये भाग मुख्यतः समय के अनुसार हैं अतः इन्हें 'काल' कहते हैं। ये चार काल आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल तथा आधुनिककाल के नाम से जाने जाते हैं। प्रथम काल में हिंदी की कुछ बोलियों में रचित काव्यों के साथ-साथ आज की हिंदी (जिसे हम खड़ी बोली हिंदी कहते हैं) के भी कुछ लक्षण दिखाई पड़ते हैं। भक्तिकाल के साहित्य में मुख्यतः ब्रजभाषा और अवधी की प्रधानता है। रीतिकाल में ब्रजभाषा अपने पूर्ण उत्कर्ष पर पहुँची। आधुनिक काल में खड़ी बोली मानक हिंदी भाषा का आधार बनी तो उसी पर आधारित उर्दू कभी उससे नज़दीक तो कभी दूर होती रही। साहित्यिक प्रवृत्तियाँ, भाषा-रूपों और कवि तथा रचनाओं की दृष्टि से इस संपूर्ण हिंदी काव्य की प्रमुख बातों को हम पाठ में जानने का प्रयास करेंगे।

25.2 हिंदी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन

हिंदी साहित्य का इतिहास लिखने वाले विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से काल-विभाजन किया है, आचार्य रामचंद्र शुक्ल का काल-विभाजन लोगों ने अधिक उपयुक्त माना है। शुक्ल जी ने विक्रम संवत् का उल्लेख किया है, जिसे हम निम्नलिखित वृक्ष-आरेख रूप में रख सकते हैं।

हिंदी साहित्य

आदिकाल
(वीरगाथा काल)
1000 ई. से 1350 ई.

मध्यकाल
(भक्ति और रीतिकाल)
1350 ई. से 1850 ई.

आधुनिक काल
(गद्य काल)
1850 ई. से आज तक

पूर्व मध्यकाल
(भक्तिकाल)
1350 ई. से 1650 ई.

उत्तर मध्यकाल
(रीतिकाल या शृंगारकाल)
1650 ई. से 1850 ई.

आइए, अब अलग-अलग कालों की राजनीतिक-सामाजिक परिस्थितियों, प्रमुख कवियों और उनकी विशेषताओं के बारे में पढ़ते हैं।

25.3 आदिकाल

आदिकाल में विविध प्रकार की काव्य रचनाएँ हुईं। जिनकी विशेषता के आधार पर इसे अलग-अलग नामों से जाना जाता है। इस काल को वीरगाथा काल, प्रारंभिक काल, संधिकाल, सिद्ध-सामंत आदि अनेक नाम दिए गए। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने इसे आदिकाल नाम से ही स्वीकार किया। आइए, इनके बारे में थोड़ा और पढ़ें:

आदिकाल की काव्य-प्रवृत्तियों पर विचार करने से पहले हम यह देखें कि आदिकाल में किस-किस प्रकार का साहित्य रचा गया।

आदिकाल

- **धार्मिक प्रचार-प्रसार साहित्य**
  - **सिद्ध साहित्य**
  - **नाथ साहित्य**
  - **जैन साहित्य**
- **वीर काव्य**
  - **रासो साहित्य**
- **अन्य**
  - **अमीर खुसरो**
  - **विद्यापति**

हिंदी साहित्य के आदिकाल का प्रारंभ वीर गाथाओं से शुरू होता है। भूमिका के रूप में अपभ्रंश-साहित्य को जानना इसलिए ज़रूरी है कि आधुनिक हिंदी-भाषाओं का उदय इसी अपभ्रंश काल से हुआ।

अपभ्रंश में रचना सातवीं सदी के आस-पास मिलने लगती है। लेकिन दसवीं सदी तक आते-आते इसमें प्रचुर मात्रा में साहित्य लिखा जा चुका था। अपभ्रंश साहित्य पर विचार करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि ये रचनाएँ शुद्ध साहित्यिक कोटि की नहीं थीं। ये रचनाएँ विभिन्न धार्मिक संप्रदायों/मतों की हैं और धर्मों, मतों के प्रचार के लिए लिखी गई थीं।

बौद्ध धर्म का जब पतन हुआ तो वह हीनयान और वज्रयान दो शाखाओं में बँट गया। इनमें पूरब में वज्रयानी बिहार से लेकर आसाम तक फैले हुए थे। 'चौरासी सिद्ध' इन्हीं में से हुए। प्रसिद्ध गुरु गोरखनाथ भी इन्हीं चौरासी सिद्धों में से एक थे। इन्होंने अलग से नाथ पंथ चलाया। गोरखनाथ का समय राहुल सांकृत्यायन जी के अनुसार विक्रम की 10वीं सदी ठहरता है। यानी पृथ्वीराज चौहान के कुछ समय बाद में।

एक बात ध्यान देने की है। यही नाथ पंथ और सिद्ध संप्रदाय आगे चलकर भक्ति संप्रदाय का आधार बना। कम-से-कम ज्ञानाश्रयी शाखा का 75 प्रतिशत तो इन्हीं से लिया गया था। साखी, बानी, पद आदि विधाएँ इसी काल में पनपीं। साधुओं की सधुक्कड़ी और संधा भाषाओं का उदय भी इन्हीं नाथों और सिद्धों से मानना चाहिए। ज्ञानाश्रयी शाखा का रहस्यवाद तो पूरा का पूरा इन्हीं का था। इसके अतिरिक्त जाति-पाँति का विरोध, मूर्तिपूजा का विरोध भी यहीं से आया।

टिप्पणी

नाथ और सिद्धों की भाषा देश-भाषा मिश्रित अपभ्रंश है अर्थात् पुरानी हिंदी की काव्य-भाषा।

उस समय रचनाएँ मुख्य रूप से दोहों, चौपाइयों तथा पदों में की जाती थीं। लेकिन इन नाथों और सिद्धों की रचनाओं को शुद्ध साहित्य की कोटि में न मानकर धार्मिक अधिक माना गया।

सिद्ध-साहित्य

सिद्ध-साहित्य : बौद्धधर्म के वज्रयान तत्त्व के प्रचार के लिए रचित साहित्य। आदिकाल का सर्वाधिक उपयुक्त नाम 'आदिवासी' ही है।

आप अभी पढ़ चुके हैं कि बौद्ध-धर्म की एक शाखा वज्रयान कहलाई। इस शाखा के विद्वान् सिद्ध कहलाए। सिद्धों की संख्या चौरासी बताई गई है। इन सिद्धों ने बौद्ध-धर्म के वज्रयान तत्त्व का प्रचार करने के लिए जो साहित्य जनभाषा में लिखा वह सिद्ध-साहित्य कहलाया।

84 सिद्ध हुए। ये बौद्धधर्म की विकृत शाखा के महंत जैसे थे। इनके नामों के आगे 'पा' लिखा मिलता है—शबरपा, सरहपा आदि।

सिद्धों के नामों के आगे आदरार्थ 'पा' जोड़ा जाता है, जैसे सरहपा, शबरपा, लुइपा, डोम्भिमा, कण्हपा, आदि। सरहपा कृत 'दोहाकोश' तथा शबरपा कृत 'चर्यापद' सिद्ध-साहित्य के प्रमुख ग्रंथ हैं। सिद्ध साहित्य का प्रभाव भक्तिकाल तक, विशेषतः संत साहित्य पर दिखाई देता है।

नाथ-साहित्य

सिद्धों की परंपरा का विकसित रूप नाथपंथ, नाथपंथियों द्वारा रचित साहित्य—नाथ-साहित्य।

सिद्धों की वाममार्गी भोगप्रधान योग-साधना की प्रतिक्रिया के रूप में आदिकाल में मत्स्येन्द्रनाथ (मछन्दरनाथ) तथा गोरखनाथ (जिनके नाम पर गोरखपुर शहर बसा है) ने नाथपंथ चलाया। गोरखपुर में बहुत बड़ा गोरखनाथ का मंदिर है नाथपंथ सिद्धों का ही सुधरा हुआ रूप है। नाथों की संख्या नौ बताई गई है। इन नाथों द्वारा रचित प्रचारात्मक साहित्य नाथ-साहित्य कहलाया।

नाथ-साहित्य के आरंभकर्ता हैं—गोरखनाथ। इनकी चौदह रचनाएँ बताई जाती हैं। डॉ. बड़थ्वाल ने 'गोरखबानी' नाम से इनकी रचनाओं का एक संकलन संपादित किया है। इनके साहित्य में लोक नीति और साधना की व्यापकता है। गुरु गोरखनाथ ने सहयोग का उपदेश दिया था। 'ह' का अर्थ है सूर्य और 'ठ' का अर्थ है चंद्र। इन दोनों के योग को ही 'हठयोग' कहते हैं। गोरखनाथ ने ही षट्चक्रों वाला योगमार्ग हिंदी-साहित्य में चलाया था। गोरखनाथ ने लिखा है कि धीर वही है जिसका चित्त विकृत न हो :

नौ लख पातरि आगे नाचैं, पीछे सहज अखाड़ा।
ऐसे मन लै जोगी खेलै, तब अंतरि बसै भंडारा।।

नाथ नौ हुए।
सिद्धों के सिद्धांतों को इन्होंने सुधारा और योगमार्ग के प्रतिपादन का काव्य रचा।

स्पष्ट है कि खड़ीबोली की झलक गोरखनाथ की रचनाओं में मिलती है, इसीलिए इन्हें हिंदी का आदि कवि कहा जाता है।

इसी परंपरा का विकास भक्तिकाल के कवि कबीर में मिलता है।

अन्य प्रसिद्ध नाथपंथी कवि हैं – चौरंगीनाथ, गोपीचंद, भरथरी (भर्तृहरि) आदि। इन सभी कवियों ने प्रायः गोरखनाथ का ही अनुसरण किया है।

जैन-साहित्य

जिस प्रकार हिंदी के पूर्वी क्षेत्र में सिद्धों ने बौद्ध-धर्म का प्रचार हिंदी-कविता के माध्यम

से किया, उसी प्रकार पश्चिमी क्षेत्र में जैन साधुओं ने अपने मत का प्रचार किया। जैन-साहित्य का सर्वाधिक लोकप्रिय रूप 'रास' ग्रंथ हैं। इनमें उपदेशात्मकता है। मुख्यतः जैन-तीर्थंकरों के जीवनचरित्र तथा वैष्णव-अवतारों की कथाएँ हैं।

शालिभद्र सूरि रचित 'भरतेश्वर-बाहुबली रास' को जैन-साहित्य की रास-परंपरा का पहला ग्रंथ माना जाता है। इस ग्रंथ में भरतेश्वर तथा बाहुबली का चरित्र-वर्णित है। इसी प्रकार से जैन आचार्य ने 'श्रावकाचार' की रचना की। आसगु की रचना है 'चन्दनबालारास'। जिनधर्म सूरि की कृति है 'स्थूलिभद्ररास'। विजयसेन सूरि ने 'रेवंतगिरिरास' की रचना की तथा सुमति मणि ने नेमिनाथ का चरित्र 'नेमिनाथरास' में प्रस्तुत किया। स्वयंभू सर्वाधिक प्रसिद्ध हुए।

रासो-साहित्य या वीर-काव्य या वीरगाथाकाल (सं. 1050-1373)

वीर गाथाओं की रचना देश-भाषा अर्थात् जन भाषा में हुई है। यह भाषा उस समय के जनसाधारण की भाषा थी। ऐसा नहीं है कि उस काल में नीति धर्म या उपदेशपरक रचनाएँ नहीं हो रही थीं। लेकिन मुख्य बल वीर गाथाओं पर था। यह समय सल्तनत काल के आसपास का है। मुसलमान भारत के पश्चिमी छोर पर बसने लगे थे और तुर्कों के आक्रमण लगातार जारी थे। स्वयं राजपूत राजा भी आपस में युद्ध किया करते थे। ऐसी दशा में दरबारी कवि अपने आश्रयदाताओं के गुणों और शौर्य का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन किया करते थे। इन्हीं दरबारी कवियों को 'चारण' भी कहा गया है। इसलिए वीर-काव्य को चारण-काव्य भी कहा जाता है।

ये वीरगाथाएँ दो रूपों में मिलती हैं–प्रबंध काव्य के रूप में और वीर गीतों के रूप में। प्रबंध काव्य के रूप में जो सबसे प्राचीन ग्रंथ उपलब्ध है, वह है 'पृथ्वीराज रासो।' वीर गीत के रूप में सबसे पुरानी रचना 'बीसलदेव रासो' है। इसमें समयानुसार भाषा-परिवर्तन के भी संकेत मिलते हैं। इसी तरह से आल्हा है, जिसमें समय-समय पर भाषा-परिवर्तन होता रहा।

खुमान रासो : शिव सिंह सरोज के अनुसार एक अज्ञातनामी भाट ने 'खुमान रासो' नामक काव्य ग्रंथ लिखा था, जिसमें श्री रामचंद्र से लेकर खुमान तक के युद्धों का वर्णन है। संवत् 810 से लेकर सं. 1000 के बीच चित्तौड़ में रावल खुमान नामक तीन राजा हुए। कर्नल टॉड ने इन तीनों को एक मान कर इनके युद्धों का वर्णन किया है। खुमान के समय बगदाद के खलीफा अलमान् ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया। उसकी रक्षा हो गई, खुमान ने 24 युद्ध किए और सं. 869 से 893 तक राज्य किया। यह सारा वर्णन 'दलपति विजय' नामक किसी रासो पर आधारित है।

बीसलदेव रासो : नरपति नाल्ह नामक कवि बीसल देव का समकालीन था और संभवतः उसका दरबारी कवि था। इसने 'बीसलदेव रासो' नाम का एक छोटा-सा ग्रंथ लिखा है। शार्ङगधर कृत 'हम्मीर रासो', जगनिक रचित 'परमाल रासो' (उत्तर प्रदेश में 'आल्हखंड' के नाम से जो काव्य प्रचलित है। धीरे-धीरे 'आल्हा' लोकगीत की एक शैली बन गया और आधुनिक विषयों पर भी 'आल्हा' लिखे जाने लगे। इसी काव्य की ये पंक्तियाँ हैं, जो लोकजिह्वा पर चढ़ गई हैं–

टिप्पणी

जैन साधुओं द्वारा अपने धर्म के प्रचार के लिए रचित साहित्य जैन साहित्य है। इनका सबसे लोकप्रिय रूप 'रास' है।

क्षत्रिय राजाओं के दरबारी चरण कवियों द्वारा रचित रासो काव्यों में आश्रयदाता राजाओं की वीरता का वर्णन है। ये ही वीर-काव्य हैं।

जैन मुनियों ने अपने धर्म के प्रचार के लिए जो साहित्य रचा वह जैन साहित्य कहलाया।

'बारह बरिस सौ कूकर जीवै, अरु तेरह लौ जिये सयार।
बरस अठारह क्षत्रिय जीवै, आगे जीवन को धिक्कार।।'

इस काल में ऐसे प्रबंधकाव्य रचे गए जिनमें वीर रस तथा श्रृंगार को महत्त्व मिला। इन युद्ध-कथाओं को 'रासो' कहा गया। 'पृथ्वीराज रासो' सर्वाधिक चर्चित ग्रंथ है।

पृथ्वीराज रासो: 'पृथ्वीराज रासो' हिंदी का प्रथम महाकाव्य है और इसके रचयिता चंदबरदाई हिंदी के प्रथम महाकवि हैं। पृथ्वीराज रासो ढाई हज़ार पृष्ठों का बहुत बड़ा ग्रंथ है जिसमें 96 अध्याय हैं। इसमें प्राचीन समय में प्रचलित प्रायः सभी छंदों का प्रयोग हुआ है। पृथ्वीराज रासो पूरा चंद का लिखा हुआ नहीं है। इसका उत्तरार्ध उनके पुत्र जल्हण ने पूरा किया। इसका संकेत रासो में ही मिलता है:

'पुस्तक जल्हण हाथ दै चलि गज्जन नृप काज।

अन्य रचनाएँ: अब तक हम हिंदी-साहित्य के आदि काव्य पर बहुत बातें कर चुके हैं। हमने शुरू में ही कहा था कि असल में रासो ग्रंथों, नाथों और जैनियों की रचनाओं में बहुत कुछ प्राकृत का अंश बच रहा था। वे शुद्ध हिंदी की कोटि में नहीं आतीं। शुद्ध हिंदी में रचनाएँ परवर्ती काल में ही हो पाईं। और उस समय इसके दो प्रतिनिधि कवि थे– पश्चिम में अमीर-खुसरो और सुदूर पूरब में विद्यापति।

खुसरो ने पहेलियाँ, प्रवृत्तियाँ लिखीं। विद्यापति की 'पदावली' अत्यंत प्रसिद्ध हुई। समय की दृष्टि से ये भी आदिकाल के कवि हैं पर अन्य प्रवृत्तियों से अलग हैं।

खुसरो : खुसरो ने अपनी रचना सं. 1340 के आसपास आरंभ की। इन्होंने बलबन से लेकर अलाउद्दीन, कुतुबुद्दीन, मुबारक शाह आदि कई शासकों का जमाना देखा था। इनकी मृत्यु सं. 1381 में हुई। ये फ़ारसी के बहुत अच्छे कवि थे। सरल भाषा में इनकी मुकरियाँ और पहेलियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं।

पटियाली जिला एटा (उ.प्र.) में 1253 ई. में जन्मे अमीर खुसरो ने दिल्ली-मेरठ की चलती खड़ी बोली में लोक-रंजक दोहे, मुकरियाँ, पहेलियाँ लिखीं, अन्य काव्य-रचना फ़ारसी में कीं।

इनकी बोली पर दिल्ली तथा मेरठ की तत्कालीन भाषा का प्रभाव था। खड़ीबोली के पुराने रूप के दर्शन अमीर खुसरो की पहेलियों तथा मुकरियों में किए जा सकते हैं। इस भाषा में अरबी तथा फ़ारसी शब्दों का प्रयोग हिंदी क्रियाओं के साथ किया गया है। खुसरो की निम्नलिखित पहेली तो आज भी लोगों की जिह्वा पर है–

एक थाल मोती भरा, सबके सिर पर औंधा धरा।
चारों ओर वह थाली फिरे, मोती उससे एक न गिरे।।
(आकाश)

गोरी सोवे सेज पर, मुख पर डारे केस।
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुँ देस।।
(हसरत निज़ामुद्दीन की मृत्यु पर लिखा गया दोहा)

उनकी भाषा का एक और नमूना देखें –

'बाला था जब सबको भाया, बढ़ा हुआ कुछ काम न आया।
खुसरो कह दिया उसका नाँव, अर्थ करो नहीं छोड़ो गाँव।।'
(दिया, दीपक)

विद्यापति बिहार राज्य के मिथिला जनपद के अत्यंत लोकप्रिय कवि थे। उनकी राधा-कृष्ण से संबंधित 'पदावली' उनकी प्रसिद्धि का आधार है जिसकी भाषा मैथिली है।

विद्यापति : विद्यापति अपभ्रंश के भी कवि हैं। लेकिन जिसके कारण ये कोकिल मैथिल कहलाए वह इनकी 'पदावली' है जो उस क्षेत्र में प्रचलित 'मैथिली' में है। विद्यापति के पद प्रायः श्रृंगार के ही हैं जिसमें नायक और नायिका कृष्ण और राधा हैं। विद्यापति सं. 1460 में तिरहर के राजा शिवसिंह के यहाँ वर्तमान थे। उनके काव्य में वैष्णव धर्म की मर्यादा और शैव मत का तादात्म्य-भाव दोनों एक साथ मिलते हैं। काम-भाव और शरीर के सौंदर्य के अनेक चित्र उनके काव्य में मिलते हैं। हालाँकि अपने समय की परंपरा

के अनुसार विद्यापति ने अपने आश्रयदाता राजाओं को केंद्र में रखकर 'कीर्तिलता' और कीर्तिपताका' ग्रंथों की भी रचना की। **'कीर्तिलता'** अवहट्ठ भाषा रूप में उपलब्ध है।

मोटे हिसाब से वीरगाथा काल महाराज हम्मीर के काल तक ही समझना चाहिए। वीर गाथाएँ इसके बाद भी लिखी जाती रही होंगी। लेकिन इसके बाद हिंदी साहित्य की मुख्यधारा भक्तिकाल में प्रवेश कर जाती है।

आदिकालीन काव्य की विशेष बातें

- आदिकालीन साहित्य में विषयों, काव्य-रूपों तथा काव्य-भाषा की भरपूर विविधता है।
- सिद्ध कवि सरहपा (पं. राहुल सांकृत्यायन के अनुसार) हिंदी परंपरा के पहले कवि हैं।
- नाथपंथियों ने योगी को सबसे ऊँचा बताया और जैन कवियों ने अपनी धर्म-साधना को सीधे-सीधे अभिव्यक्त किया।
- चंदबरदाई कृत 'पृथ्वीराज रासो' इस काल का प्रसिद्ध वीर-काव्य है। यों, कुछ लोग नरपति नाल्ह रचित 'बीसलदेव रासो' (गीतात्मक ग्रंथ) को पहला वीर-काव्य मानते हैं।
- जगनिक ने प्रसिद्ध राजा परमाल के वीर सेनापतियों आल्हा और ऊदल के संबंध में 'परमाल रासो' नामक ग्रंथ रचा। यह ग्रंथ उपलब्ध नहीं है। बुंदेलखंड में लोकप्रिय आल्हा इसी काव्यग्रंथ का अंश है।
- वीरता पूर्ण रचनाओं द्वारा वीरों को प्रेरित करने का कार्य कवियों ने किया। इस काल का वीरगाथात्मक साहित्य युद्ध की गूँजों से भरा है।
- अमीर खुसरो ने दिल्ली-मेरठ की चलती खड़ी बोली में मुकरियाँ, पहेलियाँ तथा दोहे रचे।
- विद्यापति ने अपने कृष्णभक्ति के पदों में शृंगार का सुंदर चित्रण किया और **'कीर्तिलता'** अवहट्ठ में लिखी।

पाठगत प्रश्न 25.1

निम्नलिखित कथनों में से सही के सामने (√) चिह्न और गलत के सामने (X) चिह्न लगाएँ–

1. आदिकाल का सर्वाधिक उपयुक्त नाम वीरगाथा-काल है। ( )
2. नाथपंथ सिद्धों की परंपरा का विकसित रूप है। ( )
3. जैन-साहित्य का सबसे लोकप्रिय रूप 'रास' है। ( )
4. बौद्ध धर्म की एक शाखा में से सिद्ध हुए। ( )
5. रासो-ग्रंथ दरबारी कवियों के द्वारा रचित है। ( )
6. अमीर खुसरो ने पहेलियाँ लिखीं तथा विद्यापति ने कृष्णभक्ति के पद रचे। ( )

टिप्पणी

7. विद्यापति ने पहेलियाँ रचीं। ( )
8. अमीर खुसरो ने भक्ति और श्रृंगार के पद रचे। ( )
9. खुसरो की भाषा आज की खड़ी बोली से नहीं मिलती। ( )
10. विद्यापति की भाषा मैथिली है। ( )

25.4 भक्तिकाल

भक्तिकाल से अभिप्राय

भक्तिकाल के कवियों की रचनाएँ आप रैदास, तुलसी, मीराँबाई आदि के पाठों में पढ़ चुके हैं। आप जानते हैं भक्ति का अर्थ है भजना। पूजा आदि में अनुराग तथा कथा आदि में अनुरक्ति को भक्ति कहते हैं। इसीलिए हिंदी साहित्य का वह समय जिसमें ईश्वर की आराधना, भजन आदि से संबंधित काव्य रचा गया, ईश्वर के अवतारों की कथा गाई गई, 'भक्तिकाल' कहलाता है।

हिंदी साहित्य के इतिहास में लगभग 1350 ई0 से 1650 ई0 तक का समय (लगभग तीन सौ वर्ष) भक्तिकाल कहलाता है। इन वर्षों में कवियों ने ईश्वर की आराधना में अपनी सारी रचना-शक्ति लगा दी। अलग-अलग कवियों ने ईश्वर के निराकार (जिसका कोई आकार या रूप नहीं) और साकार (जिनका आकार और रूप है) रूप का वर्णन किया और आपसी भेद-भाव भुला कर प्रेम से रहने का उपदेश दिया। धर्म के बाहरी आडंबरों, दिखावों आदि की आलोचना की और इनकी बुराइयों पर प्रहार किया। ऐसे ही काव्य को भक्ति-काव्य कहा गया। उस काल के प्रमुख कवि कबीर, रैदास, नानक, दादूदयाल, सुंदरदास, मलूकदास, कुतबन, मंझन, जायसी, उसमान, नूरमुहम्मद, सूरदास, परमानंददास, कुंभनदास, नंददास, हितहरिवंश, हरिदास, रसखान, ध्रुवदास, मीराँबाई, तुलसीदास, अग्रदास, नाभादास आदि हैं।

राजनीतिक तथा सामाजिक परिस्थितियाँ

भक्ति-आंदोलन के पूर्व राजनीतिक अव्यवस्था, उत्पीड़न तथा सामाजिक सुरक्षा का अभाव था। सामाजिक जीवन विच्छिन्न और क्षीण हो गया था। अनेक प्रकार की कुप्रथाओं ने घर कर लिया था तथा धर्म बाह्याडंबर और निरर्थक कर्मकांड से घिर गया था। शासन-व्यवस्थाएँ पूर्णतः अस्त-व्यस्त हो गई थीं। धर्म के नाम पर लोग आपस में झगड़ते रहते थे। आपसी भेद-भाव बढ़ रहा था। जाति-पाँति पर बल था। ऐसी स्थिति में भक्ति-भावना एक आंदोलन के रूप में उभर कर सामने आई। इस भक्ति-भावना के बीज तो आप आदिकाल में भी देख सकते हैं। भक्तिकाल के कुछ सच्चे भक्तों और साधकों ने सामाजिक बुराइयों को रोकने के लिए ईश्वर के सच्चे रूप और धर्म के मर्म को समझाने की ईमानदार कोशिश की। इसके फलस्वरूप भक्ति-काव्य का जन्म हुआ और धीरे-धीरे यह विकसित होता गया। इस काल के काव्य में ऊँचे आदर्शों के कारण इसे हिंदी साहित्य का 'स्वर्णयुग' कहा गया। इस काल के कवियों ने लोगों को बोलचाल की भाषा में मानव-जीवन का सही अर्थ समझाया और ऊँच-नीच तथा जाति-पाँति के भेद-भाव को भुलाकर, प्रेम से रहने की शिक्षा दी।

टिप्पणी

भक्ति-काव्य की विभिन्न शाखाएँ

आप पहले पढ़ चुके हैं प्रमुखतः भक्ति दो प्रकार की होती है, निर्गुण भक्ति और सगुण भक्ति। इसी आधार पर भक्ति-काव्य की दो प्रमुख **धाराएँ** हुईं – निर्गुण काव्यधारा और सगुण काव्य धारा। निर्गुण काव्य-धारा दो रूपों में विकसित हुई–ज्ञानमार्गी तथा प्रेममार्गी। सगुण भक्ति में विष्णु के अवतारों में सर्वाधिक लोकप्रिय राम और कृष्ण को केंद्र में रख कर काव्यरचना की गई, जिसे राम भक्ति काव्य और कृष्ण भक्ति काव्य के नाम से जाना जाता है। निम्नलिखित वृक्ष आरेख से यह बात और स्पष्ट हो जाएगी–

भक्ति-काव्य

- **निर्गुण काव्य-धारा**
  - **ज्ञानमार्गी शाखा** (संतकाव्य)
  - **प्रेममार्गी शाखा** (सूफी काव्य)
- **सगुण काव्य-धारा**
  - **राम-भक्ति काव्य**
  - **कृष्ण-भक्ति काव्य**

भक्तिकाल का समय : 1350 ई. से 1650 ई. तक।

आइए, इन पर अलग-अलग चर्चा करें और इनके प्रमुख कवियों तथा रचनाओं का परिचय प्राप्त करें।

निर्गुण काव्य-धारा

इस काव्य-धारा के कवियों ने ईश्वर को रूप, आकार आदि से रहित (निः+गुण;गुण=रूप) माना है। ईश्वर के अवतार में ये विश्वास नहीं करते। वे तर्क (ज्ञान) के आधार पर अवतारवाद का खंडन करते हैं तथा ईश्वर को आंतरिक अनुभूति का विषय मानते हैं। कुछ निर्गुण उपासक कवियों ने प्रेमकथाओं के माध्यम से ईश्वर के निराकार रूप को समझाने का प्रयास किया। इस तरह निर्गुण काव्य-धारा की दो उप-धाराएँ हो गईं। पहली ज्ञानमार्गी धारा, दूसरी प्रेममार्गी धारा। ज्ञानमार्गी धारा को मुख्यतः संतों ने पुष्ट किया इसलिए इसे संत-काव्य या संत-साहित्य भी कहते हैं। प्रेममार्गी धारा के कवि सूफी मत (इस्लाम और भारतीय वेदांत दर्शन का मिला-जुला रूप) को मानते थे। इसीलिए प्रेममार्गी धारा के काव्य-साहित्य को सूफी काव्य या प्रेमाख्यानक (प्रेम+आख्यान; आख्यान अर्थात कथा) काव्य भी कहते हैं। निर्गुण संत-काव्य के प्रवर्तक **कबीरदास** (1399–1518 ई.) माने जाते हैं। कबीर के संबंध में अनेक परस्पर विरोधी धारणाएँ प्रचलित हैं। इतना निश्चित है कि उन्होंने औपचारिक शिक्षा नहीं प्राप्त की थी। वे रामानंद के शिष्य थे। उन्होंने हिंदू और मुसलमान दोनों में व्याप्त पाखंड की कड़े शब्दों में निंदा की। अन्य धार्मिक तथा सामाजिक संस्कारों की तरह अभिव्यक्ति की भाषा और शैली भी उन्होंने अपने पूर्ववर्ती सिद्धों और नाथपंथी जोगियों से प्राप्त की तथा उसे अपने समय और समाज के अनुकूल निखारा। उनकी गणना हिंदी के शीर्ष कवियों में की जाती है। अनेक भाषाओं के मिले-जुले रूप के कारण उनकी भाषा नितांत भिन्न प्रकार की है और संभवतः इसी कारण 'सधुक्कड़ी' है।

राजनीतिक और सामाजिक द ष्टि से इस काल में स्थिरता नहीं थी। सर्वत्र असंतोष था।

निर्गुण कवियों ने ईश्वर के उस स्वरूप की आराधना की जो रूप और आकार से रहित है। इन्होंने धार्मिक आडंबरों की निंदा की।

कबीर के अतिरिक्त निर्गुण संतों की परंपरा में रैदास, कमाल, नानक, दादू, मलूकदास, सहजोबाई, दयाबाई, सुंदरदास आदि अनेक भक्त हुए हैं। इनमें से अधिकांश तत्कालीन समाज में निम्न समझी जाने वाली जातियों के थे। इन्होंने जनसामान्य की भाषा में भक्ति का संदेश लोगों तक पहुँचाया।

संत-काव्य

संत-काव्य में शब्द और शैली के चमत्कार की जगह भाव-सौंदर्य पर ध्यान दिया गया है। संत कवियों ने किसी एक धर्म को अपना आदर्श न मानकर एक व्यापक जीवन-दर्शन की ओर संकेत किया है, जिसमें सारे विश्व का कल्याण समाहित हो। संत कवियों ने अपनी काव्य रचना प्रायः 'साखी' तथा 'सबद' में की है, जो अधिकतर गेय हुआ करती हैं। इनमें कवियों ने आत्म-निवेदन जैसे व्यक्तिगत उद्‌गारों को ही प्रधानता दी। संतों ने कविता लिखने के उद्‌देश्य से अपनी रचनाओं का संकलन नहीं किया। वे तो अपने उद्‌गार व्यक्त कर रहे थे, इनके शिष्यों ने इनकी वाणियों ('संतों की बानी') का संकलन किया। इन संत कवियों की संकलित बानी के आधार पर संत काव्य की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

संत काव्य की विशेषताएँ

- संतों ने ईश्वर को रूप-गुण से रहित मानकर उसके नाम की उपासना पर बल दिया। अवतारवाद को इन्होंने स्वीकार नहीं किया।
- ईश्वर प्राप्ति में माया को बाधक कहकर उसका तिरस्कार किया।
- गृहस्थ-जीवन में रहते हुए ईश्वर-भजन का उपदेश दिया।
- माला फेरने, मूर्ति-पूजा करने, तीर्थ आदि में जाने को धार्मिक आडंबर कहकर उनका खंडन किया। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र वर्णों के आधार पर लोगों को ऊँचा या नीचा, श्रेष्ठ तथा हीन समझने वाली वर्ण-व्यवस्था की इन्होंने विशेष रूप से निंदा की और हँसी उड़ाई।
- संतों ने मुख्यतः गेय मुक्तकों की रचना की।
- संत-साहित्य में सूक्तियों का प्राचुर्य है।
- संतों की भाषा सरल है। इसमें अनेक भारतीय भाषाओं के शब्द घुले-मिले हैं, इसलिए इसे सधुक्कड़ी अथवा खिचड़ी भाषा के नाम से भी जाना जाता है।

पाठगत प्रश्न 25.2

1. निम्नलिखित कथनों में से सही के सामने (√) चिह्न और गलत के सामने (X) चिह्न लगाएँ–

   (क) भक्ति का अर्थ है भजना, पूजा आदि में अनुराग और अनुरक्ति। ( )

   (ख) भक्तिकाल का समय 1350 ई. से 1650 ई. तक माना गया है। ( )

टिप्पणी

(ग) भक्तिकाल का समय राजनीतिक उथल-पुथल और सामाजिक असंतोष का काल है। ( )

(घ) भक्तिकाल को हिंदी का स्वर्णयुग कहा गया। ( )

2. निम्नलिखित वाक्यों को पूरा कीजिए:

(क) .... दो प्रकार की होती है, निर्गुण भक्ति और सगुण भक्ति।

(ख) निर्गुण काव्य-धारा के कवि ईश्वर के ....में विश्वास नहीं करते।

(ग) .... काव्य-धारा की दो उपधाराएँ हैं– पहली ज्ञानमार्गी धारा, दूसरी प्रेममार्गी धारा।

(घ) संत-काव्य में शब्द और शैली के चमत्कार की जगह..............सौंदर्य पर ध्यान दिया गया है।

सूफी काव्य

सूफी साधक प्रेम के द्वारा परमात्मा को पाने की बात करते हैं। परमात्मा उनके लिए परम प्रिय है और आत्मा उस प्रियतम को पाने के लिए व्याकुल रहती है। आत्मा और परमात्मा के बीच के इस प्रेम को व्यक्त करने के लिए सूफी कवि प्रेम की विभिन्न मनोदशाओं का वर्णन करते हैं। साकी, शऱाब, माशूक, जुल्फ आदि का प्रयोग इन कवियों ने सांकेतिक अर्थ में किया। अधिकांश सूफी कवि मुस्लिम धर्म के मानने वाले हैं। इसके साथ-साथ वे लोक जीवन में गहरी पैठ रखते हैं तथा मनुष्यों के परस्पर संबंध और मनुष्य तथा प्रकृति के संबंध को प्रेममय देखना चाहते हैं। इस्लाम तथा भारतीय लोक संस्कृति का अद्‌भुत समन्वय इनके काव्य का विलक्षण गुण है। प्रसिद्ध लौकिक प्रेमकथाओं के द्वारा इन्होंने अलौकिक ईश्वर-प्रेम का वर्णन किया है। प्रेमकथाओं पर आधारित होने के कारण सूफी काव्य को प्रेमाख्यानक (प्रेम+आख्यानक) काव्य कहा जाता है। इन काव्य कथाओं की भाषा अवधी है। इस्लाम के एकेश्वरवाद और भारतीय वेदांत को मिलाकर इन्होंने अपना चिंतन विकसित किया। काव्यकला की दृष्टि से सूफी काव्य अत्यंत श्रेष्ठ है। सौंदर्य चित्रण और प्रकृति चित्रण के लिए विभिन्न अलंकारों तथा अभिव्यक्तियों का अनूठा और सहज प्रयोग इनके काव्य की प्रमुख विशेषता है।

मुल्ला दाऊद सूफी साहित्य के पहले कवि हैं। इनकी प्रसिद्ध रचना है–चंदायन। अन्य प्रसिद्ध सूफी कवि और उनके काव्य हैं–कुतुबन (मृगावती), मंझन (मधुमालती), उसमान (चित्रावली), जायसी (पद्‌मावत) तथा नूर मुहम्मद (अनुराग बाँसुरी)। इन कवियों में सबसे अधिक प्रसिद्ध जायसी हैं और उनका 'पद्‌मावत' अत्यंत प्रसिद्ध ग्रंथ है।

टिप्पणी

सूफी काव्य की विशेषताएँ

- सूफियों ने प्राय: कथा-काव्य (प्रबंध काव्य) लिखे हैं।
- इन्होंने इस्लाम, वेदांत और भारतीय लोक-संस्कृति का सुंदर समन्वय किया है।
- आत्मा-परमात्मा के बीच इन्होंने आत्मा को प्रेमी और परमात्मा को प्रेमिका माना है।
- लौकिक प्रेम-कथाओं के माध्यम से इन्होंने अलौकिक ईश्वर-प्रेम का वर्णन किया है इसी कारण इनके काव्य प्रतीकात्मक हैं।
- इन काव्यों में प्रेम और विशेषत: विरह की प्रधानता है। विरह-वर्णन के लिए इन्होंने प्राय: बारहमासा शैली (बारह महीनों में प्रेमिका या प्रेमी की मनोदशा तथा तड़प का वर्णन) का प्रयोग किया है।
- इनकी भाषा अवधी है।
- इनकी शैली **मसनवी** है। मसनवी ऐसे कथाकाव्य का प्रतिरूप है, जो महाकाव्य के निकट पहुँचता है।

सगुण काव्य-धारा

सगुण का अर्थ है गुण सहित, यहाँ पर गुण का अर्थ है– रूप। यह हम जान ही चुके हैं कि ईश्वर के रूप, आकार, अवतार में विश्वास करने वाली भक्ति सगुण भक्ति कहलाती है। स्पष्ट है कि सगुण काव्यधारा में ईश्वर के साकार स्वरूप की लीलाओं का गायन हुआ है। कहते हैं–*'भक्ति द्राविड़ ऊपजी, लाये रामानंद।'* अर्थात् सगुण भक्ति-धारा या वैष्णव (विष्णु के अवतारों के प्रति) भक्ति दक्षिण भारत में प्रवाहित हुई। उत्तर भारत में इसे रामानंद लेकर आए। राम को विष्णु का अवतार मानकर उनकी उपासना का प्रवर्तन किया। इसी प्रकार वल्लभाचार्य ने कृष्ण को विष्णु का अवतार मानकर उनकी उपासना का प्रारंभ किया। इस तरह से रामभक्ति और कृष्णभक्ति की दो धाराएँ चल निकलीं। रामभक्ति धारा के तुलसीदास तथा कृष्णभक्ति धारा के सूरदास प्रमुख कवि हैं। सगुण भक्तिधारा के कवियों ने भक्ति की नौ विधियाँ (नवधा भक्ति) बताई। भक्ति के ये नौ विधि या प्रकार हैं – 1. श्रवण (ईश्वर के गुणों का सुनना), 2. कीर्तन (स्वयं ईश्वर का कीर्तन करना), 3. स्मरण (ईश्वर को याद करना), 4. पाद-सेवन (ईश्वर के चरणों की सेवा करना) 5. अर्चन (प्रभु की सेवा, शुश्रुषा करना), 6. वंदन (पूजा करना), 7. सख्य (सखा भाव से निवेदन करना), 8. दास्य (ईश्वर को स्वामी और स्वयं को उनका दास मानकर उपासना करना), 9. आत्मनिवेदन (अपनी बात विनयपूर्वक कहना)। सगुण काव्य-धारा के कवियों की रचनाओं में इन सब प्रकार की भक्ति का वर्णन हुआ है। सूर की रचनाओं में मुख्यत: सख्य भाव है हालाँकि वे वल्लभाचार्य से मुलाकात होने से पहले आत्मनिवेदन और दास्य भाव की रचनाएँ करते थे। उन्होंने 'श्रीमद्भागवत' के आधार पर कृष्ण-लीला का गायन किया है। तुलसी में दास्य भाव की प्रधानता है। रामकथा का आधार-ग्रंथ 'वाल्मीकि रामायण' है। सूर और तुलसी ने अपनी दृष्टि, नई शैली तथा रसों के विधान के द्वारा अपने काव्य को विशिष्ट बना दिया।

नौ प्रकार की भक्ति

1. श्रवण
2. कीर्तन
3. स्मरण
4. पाद–सेवन
5. अर्चन
6. वंदन
7. सख्य
8. दास्य
9. आत्म निवेदन

सगुण भक्ति-धारा तथा काव्य की विशेषताएँ

- सगुण भक्त-कवि जाति-पाँति में विश्वास नहीं करते थे। उन्होंने सभी को भक्ति का अधिकारी माना है।

  ''जाति-पाँति पूछे नहिं कोई। हरि को भजै सो हरि का होई।।''

- सगुण भक्त कवियों के आराध्य लीला करते हैं अर्थात् ये सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान हैं फिर भी आम आदमी की तरह चलते-फिरते, हँसते-बोलते तथा व्यवहार करते हैं।
- निर्गुण भक्तों की तरह इस धारा के कवियों ने भी गुरु को महत्त्व दिया है।
- इनके अनुसार ज्ञान से ईश्वर नहीं मिलते, इनकी भक्ति ईश्वर के नाम, गुण, रूप और लीला का स्मरण और वर्णन तथा उसके प्रति समर्पण भाव से प्रकट होती है।
- इनके काव्य में नवधा भक्ति को आधार बनाया गया है।
- इन्होंने भगवान के पालन करने वाले रूप की ओर अधिक ध्यान दिया है।
- मुख्यतः इन सब ने अपने आराध्य का गुण-कीर्तन किया है।

राम-भक्ति काव्यधारा

राम-भक्ति शाखा के कवियों ने राम को विष्णु का अवतार मानकर उन्हें ही अपने काव्य का विषय बनाया। रामकथा का आधारभूत ग्रंथ वाल्मीकि रचित 'रामायण' है। हिंदी में राम-भक्ति के प्रवर्तक रामानंद हैं। तुलसीदास राम-भक्ति के सबसे बड़े कवि हैं। सोलहवीं शताब्दी में इन्होंने 'रामचरितमानस' की रचना अवधी भाषा में की। यह हिंदी का अन्यतम महाकाव्य है। यह काव्यग्रंथ लोकप्रियता के साथ-साथ आदर और सम्मान का भी पात्र बना। 'रामचरितमानस' की चौपाइयाँ और दोहे जनता के हृदय में बसे हैं तथा प्रमाण की तरह प्रयुक्त किए जाते हैं। तुलसीदास ने राम-संबंधी ग्रंथ ब्रजभाषा में भी रचे, जैसे 'गीतावली', 'कवितावली', 'विनयपत्रिका' आदि।

चित्र 25.1तुलसीदास

तुलसीदास के अतिरिक्त स्वामी अग्रदास ने 'रामध्यान मंजरी' की रचना की, नाभादास ने राम-संबंधी फुटकर पद रचे। इनके बाद प्राणचंद्र चौहान ने 'रामायण महानाटक' तथा हृदयराम ने 'हनुमन्नाटक' लिखा।

टिप्पणी

राम-भक्ति धारा के काव्य की विशेषताएँ

- रामकाव्य में राम को विष्णु का अवतार माना गया है। इस धारा के काव्य के मुख्य विषय मर्यादा पुरुषोत्तम राम हैं। तुलसीदास का 'रामचरितमानस' इस धारा का विश्वप्रसिद्ध ग्रंथ है।
- 'रामचरितमानस' में राम के मर्यादापूर्ण स्वरूप का चित्रण हुआ है।
- इस धारा की भक्ति शास्त्रीय न होकर लोक-व्यवहार पर आधारित है।
- राम-काव्य प्रमुख रूप से प्रबंधात्मक (कथात्मक) काव्य है।
- मुख्यतः राम-काव्य अवधी में रचित है। यद्यपि ब्रजभाषा में भी रचनाएँ प्राप्त होती हैं।
- राम-काव्य प्रायः सभी काव्य-शैलियों में रचे गए हैं।
- मुख्यतः दोहा, चौपाई में यह काव्य रचा गया है, इसके अलावा कवित्त, सवैया आदि छंदों का प्रयोग भी हुआ है।

पाठगत प्रश्न 25.3

1. निम्नलिखित कथनों में सही अथवा गलत कथन के आगे 'हाँ' या 'नहीं' लिखकर उत्तर दीजिए :

   (क) सूफी साधक प्रेम के द्वारा परमात्मा को पाने की बात करते हैं। ( )

   (ख) सूफी काव्य की भाषा ब्रज है। ( )

   (ग) सूफी कवियों में मुल्ला दाऊद सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं। ( )

   (घ) सूफी कवियों ने हिंदू घरों में प्रसिद्ध लौकिक प्रेमकथाओं के द्वारा अलौकिक ईश्वर-प्रेम का वर्णन किया है। ( )

2. उचित विकल्प चुनकर नीचे लिखे वाक्यों को पूरा कीजिए:

   (क) सगुण भक्ति काव्य ....का काव्य है।

   (ख) राम-भक्ति काव्य में ....भक्ति प्रमुख है।

   (ग) राम-भक्ति काव्य के सबसे प्रमुख कवि ....हैं।

   (घ) सगुण भक्ति-काव्य में ....भक्ति को आधार बनाया गया है।

कृष्ण-भक्ति काव्यधारा

कृष्ण-भक्त कवि कृष्ण को विष्णु का अवतार मानते हैं, अतः कृष्ण-भक्ति भी वैष्णव भक्ति का अंग है। राम-काव्य में राम के मर्यादा-पुरुषोत्तम, आदर्श रूप का चित्रण हुआ है। जबकि, कृष्ण-काव्य में कृष्ण के लोक-रंजक रूप को ध्यान में रखकर उनकी मनोहारी लीलाओं का वर्णन किया गया है। कृष्ण-भक्ति को प्रचारित करने वाले प्रमुख संत और आचार्य हैं—निम्बार्काचार्य, चैतन्य महाप्रभु, हित हरिवंश तथा वल्लभाचार्य। आचार्य वल्लभ

ने कृष्ण-भक्ति का सर्वाधिक प्रचार किया और पुष्टि-मार्ग की स्थापना की। पुष्टि का अर्थ है भगवान् की कृपा या अनुग्रह। इसमें कृष्ण के बाल रूप की उपासना की जाती है। पुष्टिमार्ग के कई कवि हुए हैं। वल्लभाचार्य के पुत्र गोसाईं विट्ठलनाथ ने अपने पिता के चार शिष्य कवियों, कुंभनदास, सूरदास, परमानंददास और कृष्णदास तथा अपने शिष्यों में से चार कवियों, नंददास, गोविंदस्वामी, छीतस्वामी और चतुर्भुजदास को मिलाकर पुष्टि मार्गी भक्त-कवियों का एक वर्ग तैयार किया। जिसे 'अष्टछाप' के नाम से जाना जाता हैं। इन आठ कवियों के अतिरिक्त मीराँ और रसखान आदि ऐसे प्रमुख कवि हैं जिनका संबंध किसी संप्रदाय से नहीं था। सूर ने कृष्ण की लीलाओं से संबंधित लाखों पद लिखे जिनका संकलन 'सूरसागर' के नाम से प्रसिद्ध है। सूर जैसे अनन्य भक्त हैं वैसे ही उत्कृष्ट कवि। कृष्ण की बाल-लीला का अत्यंत मनोहारी चित्रण सूरदास ने किया है। सूर के पदों की भाषा ब्रज है। कृष्ण-भक्ति कवियों ने बाल-लीला के अतिरिक्त सौंदर्य का भी अत्यंत हृदयस्पर्शी चित्रण किया है। सगुण-काव्य की परंपरा में कृष्ण-भक्ति काव्य अत्यंत महत्त्वपूर्ण है और यह धारा लंबे समय तक प्रवाहमान रही है।

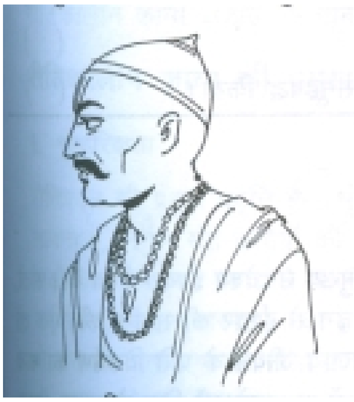

चित्र 25.2 सूरदास

कृष्ण-भक्ति काव्य की प्रमुख विशेषताएँ

- इस धारा के कवियों ने कृष्ण को विष्णु का अवतार मानकर उनकी लीलाओं का वर्णन किया है। इनकी काव्य-रचना का मूल आधार 'श्रीमद्भागवत' है।
- इस काव्य में मुख्यतः कृष्ण के लोकरंजक रूप का वर्णन किया गया है।
- इनकी भक्ति सख्य भाव की है अर्थात् इन्होंने कृष्ण के साथ सखा-भाव प्रदर्शित किया है। मीराँ ने कृष्ण को अपना पति माना है। इसे दांपत्य भाव कहते हैं।
- मुख्यतः कृष्ण की बाल-लीला और गोपियों के विरह का अत्यंत मनोहारी वर्णन किया गया है। सूर का वात्सल्य भाव का वर्णन तो अद्वितीय है।
- वात्सल्य, माधुर्य और सखा-भाव की अत्यंत सुंदर और सजीव अभिव्यक्ति कृष्ण-काव्य में हुई है।
- कृष्ण-काव्य की भाषा अत्यंत सरस ब्रजभाषा है।
- यह काव्य मुक्तक पदों के रूप में रचित है इसलिए, यह अत्यंत गेय है। सवैया, घनाक्षरी आदि छंदों का सुंदर प्रयोग हुआ है।

पाठगत प्रश्न 25.4

बताइए—सही (√) या गलत (X) ?

1. कृष्ण-भक्ति काव्य की भाषा मुख्यतः ब्रजभाषा है। ( )

टिप्पणी

2. इस काव्य में मुख्यतः कृष्ण की बाल तथा यौवन-लीलाओं का वर्णन हुआ है। ( )
3. इस धारा के सबसे प्रसिद्ध कवि सूरदास हैं। ( )
4. सूरदास का वात्सल्य-वर्णन अद्‌भुत है। ( )
5. 'अष्टछाप' के कवियों को वल्लभाचार्य ने समूहबद्ध किया। ( )

25.5 रीतिकाल

रीतिकाल से अभिप्राय

हमने देखा कि भक्तिकाल की हिंदी कविता का मुख्य उद्‌देश्य ईश्वर-भक्ति था। संतों, सूफ़ियों और सगुण भक्त कवियों ने अपने-अपने ढंग से ईश्वर की साधना की। एक तो यह कि भक्तिकालीन कविता में लोक-सुख के बजाय जीवन के प्रति विकर्षण का भाव था। दूसरे यह कि इस काल में छोटे-बड़े राजाओं-रजवाड़ों को फिर से अपना राज्य मिल गया। दिल्ली में मुग़ल शासन स्थापित हो चुका था। इस काल के कवि प्रायः किसी-न-किसी राज दरबार से जुड़े थे। दरबारों के कवि (या अन्य कवि भी) अपने आश्रयदाताओं को प्रसन्न करने के लिए प्रेम और शृंगार का चित्रण करने के साथ-साथ अलंकार, नायिका-भेद, छंद, रस आदि के शास्त्रीय विवेचन संबंधी ग्रंथ या इन्हीं विषयों पर आधारित मुक्तकों की रचनाएँ करने लगे। काव्य की इस शास्त्रीय प्रवृत्ति को 'रीति' कहा जाता है। (विशिष्ट पद-रचना रीति है)। काव्य-रचना की यह प्रवृत्ति सन् 1650 से 1850 तक प्रमुख बनी रही। इसीलिए इस प्रवृत्ति को 'रीति' प्रवृत्ति, इस काल को रीतिकाल और इस समय के साहित्य को रीतिकालीन साहित्य कहते हैं। शृंगार की अधिकता होने के कारण इस काल को 'शृंगार काल' भी कहा गया, चूँकि शृंगार वर्णन भी एक निश्चित रीति में ही लिया गया, अतः इसे रीतिकाल कहना ही उचित है। इस प्रवृत्ति के अतिरिक्त कुछ कवि ऐसे भी हैं जिन्होंने इस परिपाटी से अलग काव्य रचना की। ऐसे कवियों को रीतिमुक्त कवि कहा जाता है।

एक निश्चित परिपाटी पर लिखे जाने के कारण इस काल को रीतिकाल और इस काल में रचे गए काव्य को रीतिकाव्य कहा गया। यह समय 1650 ई. से 1850 ई. तक का है।

रीतिकालीन युग की परिस्थितियाँ

हम पहले पढ़ चुके हैं, इस दौर में मुग़ल साम्राज्य के गौरव का स्थान विलासिता, साज-सज्जा, सुरा-सुंदरी, नाच-गान, खुशामद और पाखंड ने ले लिया था। फलस्वरूप बड़े-छोटे सामंतों और ज़मीदारों में इसी विलासिता, शान-शौकत और दरबार सजाने की प्रवृत्ति बढ़ गई। काव्य-चर्चा भी इन राजाओं के लिए मनोरंजन का एक और साधन थी। इनके दरबारों में कवियों कलाकारों को इसी कारण सम्मान मिलता था। दरबारी कवि भी हर तरह से अपने आश्रयदाता को रिझाने-प्रसन्न करने का प्रयत्न करते थे और उनकी वीरता, उदारता तथा उनके पूर्वजों का गुणगान बढ़ा-चढ़ाकर करते थे। फल यह निकला कि भक्तिकाल की आध्यात्मिक साधना और लोक-जीवन से जुड़ाव वाले सरल मार्ग से भटक कर कविता आश्रयदाता राजाओं की चाटुकारिता और नायक-नायिका के चटपटे शृंगार-वर्णन में उलझकर रह गई।

इस युग के कवि के लिए प्रमुख विषय थी नारी, किंतु ध्यान नारी के तन पर था, उसके मन को पढ़ने का अवकाश न था। रीतिकालीन कवियों के वर्णन के मुख्य विषय

नायिका-भेद, नखशिख-वर्णन (नारी के पाँव से सिर तक के अंग-प्रत्यंग का शृंगारिक वर्णन) रहे। यहाँ शृंगार का प्रतिपादन ही मुख्य है। यद्यपि रीतिकालीन कवियों ने भक्ति और नीतिपरक काव्य भी रचा, परंतु वह गौण है। पर हाँ! एक विशेषता है रीतिकालीन काव्य जड़ाऊ है, खूब चमक-दमक भरा, चमत्कार-पूर्ण।

रीतिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

1. शृंगारिकता

रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्ति है– शृंगारिकता। कृष्णभक्त कवियों की प्रेम पगी रसिक भावनाओं, निर्गुण संत कवियों की कोमल प्रेम-व्यंजनाओं तथा 'लौकिक प्रेम के द्वारा अलौकिक प्रेम' को समझाने वाली सूफ़ी कवियों की प्रेम कथाओं ने रीतिकालीन कवियों के लिए शृंगार-वर्णन का द्वार पहले ही खोल दिया था। इस काल के कवियों ने दरबारी वातावरण की रसिकता के अनुरूप उसे ढालकर भोगपरक शृंगार-चित्रण में अपना कौशल दिखाया।

2. आलंकारिकता

रीतिकाल की दूसरी प्रमुख प्रवृत्ति है– आलंकारिकता। रसिकता-पगे दरबारी वातावरण में चमत्कार-प्रदर्शन के लिए कवियों को अलंकारों का सहारा लेना आवश्यक जान पड़ा। यह प्रवृत्ति दो प्रकार से परिलक्षित होती है :

(i) कुछ कवियों ने अलंकारों के लक्षण बताकर उनके उदाहरण दिए।

(ii) अन्य कवियों ने अलग से लक्षण तो नहीं बताए, किंतु उनकी कविता अलंकारों के साँचों में ढल गई।

दरबार में ही नहीं, समाज में भी धाक जमाने के लिए पांडित्य का प्रदर्शन आवश्यक था। सो इन कवियों ने अलंकृत रचनाओं से अपने आचार्यत्व की धाक जमाई। अलंकारों के द्वारा काव्य में चमत्कार पैदा किया। बिहारीलाल के ही एक दोहे में 'श्लेष' का चमत्कार देखें :

मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोय।

जा तन की झाँई परै, स्याम हरित दुति होय।।

इस दोहे में 'हरित' शब्द से तीन अर्थ निकलते हैं – 1. हरा 2. प्रसन्न 3. हर ली गई, मंद पड़ गई।

3. भक्ति और नीति

भक्तिकाल के परवर्ती होने के कारण रीतिकाल के कवियों में भक्ति का रुझान भी मिलता है। दरबारी कवि होने के कारण वे नीति के उपदेश भी देते हैं, किंतु इनकी कविताओं में भक्त-कवियों की-सी तल्लीनता नहीं है। फिर भी यत्र-तत्र भक्ति और नीति की प्रभावशाली रचनाएँ इन्होंने की हैं। भक्ति और नीति की एक-एक रचना देखें क्रमशः

टिप्पणी

(i) *वृंदावनवारी बनवारी की मुकुट वारी*
पीत पटवारी वाहि मूर्ति पै वारी हौं। (देव)

(ii) *नर की अरु नल-नीर की, गति एकै करि जोय।*
जेतो ऊँचो चढ़ि चलै, तेतो नीचो होय।।

— बिहारीलाल (विनम्रता का बखान)

4. काव्य-रूप

दरबारी वातावरण होने के कारण इस काल में प्रबंध काव्य की रचना के लिए अनुकूल वातावरण नहीं था, इसलिए इस काल में प्रायः मुक्तक ही रचे गए। दोहा, कवित्त, सवैया जैसे छंदों में रचनाएँ कर इस समय के कविगण अपने ज्ञान, कवित्व-शक्ति और चमत्कार के प्रदर्शन से बाजी मारने के पक्ष में थे।

5. ब्रजभाषा

इस काल की प्रमुख भाषा ब्रजभाषा है। भक्तिकाल में सूरदास ब्रजभाषा को विशिष्ट आकर्षण दे चुके थे। रीतिकालीन कवियों को भी ब्रजभाषा की मधुरता और कोमलता ने आकृष्ट किया।

6. लक्षण-ग्रंथों का निर्माण

आप जान चुके हैं कि दरबार में अपने पांडित्य की धाक जमाने के लिए रीतिकाल के कवियों ने आचार्य कर्म भी निभाया और लक्षण ग्रंथों की रचना की। हालाँकि इन्होंने काव्यशास्त्र के क्षेत्र में कोई मौलिकता नहीं दिखाई और संस्कृत के काव्यशास्त्रों को ही एक प्रकार से पुनः प्रस्तुत कर दिया।

7. वीर रस की कविता

इस युग के कुछ कवियों ने वीर रस की कविताएँ लिखीं। दरबार में रह रहे कवियों ने अपने आश्रयदाता राजाओं का मनोबल बढ़ाने के लिए वीर रस की कविताएँ लिखीं, हालाँकि अलंकारों का बाहुल्य इनकी कविताओं में भी है। भूषण, सूदन आदि ऐसे ही कवि हैं। भूषण की ये पंक्तियाँ देखें :

इंद्र जिमि जंभ पर बाड़व सु-अंभ पर,
रावन स-दंभ पर रघुकुल राज है।
तेज तम-अंस पर कान्ह जिमि कंस पर,
त्यों मलिच्छ–बंस पर सेर सिवराज है।

8. आलंबन-रूप में प्रकृति-चित्रण

रीतिकाल के कवियों ने प्रकृति का अत्यंत मनोहारी चित्रण किया है विभिन्न ऋतुओं के अत्यंत सजीव चित्र रीतिकालीन कविता में मिलते हैं। कहीं-कहीं ये प्रकृति के स्वतंत्र चित्र न होकर रस-विशेष के वर्णन-क्रम में उद्दीपन के रूप में आए हैं। संयोग शृंगार के क्रम में प्रकृति का रूप अत्यंत रमणीय है तो वियोग-वर्णन के क्रम में मार्मिक और पीड़ा को बढ़ाने वाला।

9. नारी-चित्रण

रीतिकाल के कवियों को अपनी उद्दाम शृंगार की कविताओं से आश्रयदाता राजाओं की

कुंठा-वासना को तृप्त करना अभीष्ट था, इस कारण उन्होंने नारी को जिस रूप में चित्रित किया है वह विलासिनी प्रेमिका है, भोग-विलास की सामग्री है। नारी के बाहरी सौंदर्य पर ही इन कवियों का ध्यान रहा है। नारी के सामाजिक महत्त्व, प्रेम- स्नेह, उसके माता-भगिनी रूप की उन्होंने अनदेखी की है। स्त्री के माथे की बिंदी के संदर्भ में बिहारीलाल का यह दोहा देखें :

कहत सबै बेंदी दिए आँक रसगुनो होत।
तिय लिलार बेंदी दिए अगनित बढ़त उदोत।।

10. नायिका-भेद वर्णन

संस्कृत काव्यशास्त्र की नकल पर इन्होंने नायिकाओं के भेद-प्रभेद का भी खूब वर्णन किया है, जैसे–स्वकीया, परकीया, सामान्या, मुग्धा, मध्या, प्रौढ़ा आदि।

रीतिकाल की प्रमुख काव्य-धाराएँ

आप पहले भी पढ़ आए हैं, रीतिकालीन कवियों को तीन धाराओं में रखा जा सकता है –

(क) रीतिबद्ध धारा, (ख) रीतिमुक्त धारा, (ग) रीति सिद्ध धारा

निम्नलिखित आरेख से इसे स्पष्टता से समझ सकते हैं –

रीतिकाल

रीतिबद्ध काव्यधारा — **प्रमुख कवि :** केशवदास, पद्माकर, भिखारीदास, चिंतामणि, देव, मतिराम, भूषण, सेनापति आदि

रीतिमुक्त काव्यधारा

- **शृंगारिक रचनाएँ** — **प्रमुख कवि :** घनानंद, बोधा
- **नीतिपरक रचनाएँ** — **प्रमुख कवि :** गिरधर
- **वीर काव्य** — **प्रमुख कवि :** सूदन, लाल

रीतिसिद्ध काव्यधारा — **प्रमुख कवि :** बिहारी लाल

(क) रीतिबद्ध काव्य-धारा

रीतिबद्ध कवि उन आचार्य कवियों को कहते हैं जिन्होंने अपने आश्रयदाता राजाओं, कवियों और काव्य-रसिकों के लिए काव्य के अंगों का निरूपण करने वाली कविता रची। काव्यांगों के लक्षण भी पद्य में ही लिखकर इन्होंने सरस और चमत्कारपूर्ण उदाहरणों की रचना की। इनका मन इन सरस उदाहरणों को रचने में ही रमता था। इनमें से कुछ कवियों ने लक्षण-ग्रंथों के साथ-साथ लक्ष्य ग्रंथ (व्यावहारिक ग्रंथ) भी रचे। कुछ ने केवल लक्षण-ग्रंथों की ही रचना की। लक्षण-ग्रंथ और लक्ष्य ग्रंथ दोनों

रचने वाले प्रमुख कवि हैं : केशव, देव, मतिराम, चिंतामणि, पद्‌माकर आदि तथा केवल लक्षण-ग्रंथ लिखने वाले कवियों में प्रमुख हैं श्रीपति आदि।

(ख) रीतिमुक्त काव्य-धारा

रीतिकाल का अधिकांश काव्य रीतिबद्ध परिपाटी पर रचा गया है, परंतु इस काल में ऐसे कवि भी हुए जिन्होंने केशवदास और चिंतामणि की तरह कोई लक्षण ग्रंथ नहीं रचा और न ही बिहारीलाल की तरह कोई रीतिसिद्ध रचना की। घनानंद, आलम, बोधा और ठाकुर आदि ऐसे ही कवि हैं। इन्होंने युगीन रूढ़ि-पालन का निर्वाह न करते हुए, अपनी स्वच्छंद भावनाओं-अनुभूतियों को सरस कवित्त-सवैयों में अभिव्यक्त किया। प्रेम और अनुराग के चित्र यहाँ भी हैं, किंतु इनमें वाक्-चातुर्य की जगह हृदय की सहजता और सरसता है। स्थूल रूप-चित्रण के साथ-साथ इन्होंने आंतरिक भाव-सौंदर्य का भी चित्रण किया। घनानंद रचित निम्नलिखित सवैया देखें :

पहिलें घन-आनँद सींचि सुजान कहीं बतियाँ अति प्यार पगी।
अब लाय बियोग की लाय बलाय बढ़ाय बिसास दगानि दगी।
अँखियाँ दुखियानि कुबानि परी, न कहूँ लगैं कौन घरी सुलगी।
मति दौरि थकी, न लहै ठिक ठौर, अमोही के मोह मिठास ठगी।

(ग) रीतिसिद्ध काव्य-धारा

रीतिकाल में ऐसे कवि भी हुए जिन्होंने रीति-काव्य की परिपाटी को अपनाते हुए भी लक्षण-ग्रंथ नहीं रचे, अपितु स्वतंत्र तथा मौलिक काव्य रचनाओं के द्वारा अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। इस धारा के अत्यंत प्रसिद्ध कवि बिहारी हैं। इनकी 'सतसई' मुक्तकों का सागर है और इसमें संकलित हर दोहे का स्वतंत्र विषय है। इन दोहों की कसावट, थोड़े से शब्दों में बड़ी बात कह देने की कला देखते ही बनती है। बिहारी-सतसई के संदर्भ में एक उक्ति काफी प्रचलित है –

सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगैं, घाव करैं गंभीर।।

पाठगत प्रश्न 25.5

1. उपयुक्त शब्द चुनकर खाली स्थानों को भरिए।

   (क) ....कवि के लिए प्रमुख विषय नारी थी।

   (ख) ....कविता में इसी लोक के सुखों-आकर्षणों की प्रमुखता थी।

   (ग) 1650 ई. से 1850 ई. तक ....काव्य की मुख्य प्रवृत्ति बनी रही।

   (घ) रीतिकाल के काव्य में ....रस की प्रधानता रही।

2. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में दीजिए–

   (क) रीतिकालीन कविता में ईश्वर-भक्ति का स्वर प्रमुख है। ( )

(ख) रीतिकाल के कवियों ने अधिकतर मुक्तक काव्य-शैली को अपनाया है। ( )

(ग) रीतिकालीन कवियों ने नारी के केवल बाहरी रूप को देखा। ( )

(घ) रीतिकाल की कविता में अलंकारों का कुशल प्रयोग हुआ है। ( )

3. निम्नलिखित वाक्यों में विकल्प के रूप में दिए गए दो-दो शब्दों में से उपयुक्त शब्द पर (√) का चिह्न लगाइए :

(क) केशव, चिंतामणि, देव और पद्माकर *रीतिबद्ध/रीतिमुक्त* कवि हैं।

(ख) घनानन्द *वीर-भावना/प्रेम-भावना* के कवि हैं।

(ग) रीतिकालीन कवि पहले *आचार्य/कवि* थे बाद में *कवि/आचार्य।*

(घ) रीतिकालीन कवियों के प्रिय छंद *दोहा-कवित्त-सवैया/चौपाई-सोरठा* थे।

(ङ) रीतिकालीन कवियों की भाषा अवधी/ब्रजभाषा है।

25.6 आधुनिक काल

आधुनिकता का अभिप्राय

हम पढ़ चुके हैं कि हिंदी साहित्य के इतिहासकारों से सन् 1850 ई. से हिंदी के आधुनिक काल का प्रारंभ माना है। आपके मन में यह प्रश्न उठता होगा कि आज से डेढ़ सौ वर्ष पूर्व जो आधुनिक था, वह भी तो आज प्राचीन हो गया। वस्तुतः आधुनिकता केवल समय की नहीं होती, दृष्टि और चेतना की होती है। 1850 ई. के आसपास से हमें हिंदी साहित्य में देश और समाज की समस्याओं और प्रश्नों के प्रति नई चेतना, नई दृष्टि और नए जीवन-मूल्य दिखाई पड़ने लगते हैं तथा अंध-जर्जर रूढ़ियों और परंपराओं के तिरस्कार का भाव दिखाई पड़ने लगता है। इसीलिए इस काल को हम 'आधुनिक काल' कहते हैं।

विदेशी शिक्षा तथा विचारों के संपर्क में आने के फलस्वरूप जनता जागरूक हुई और उसका ध्यान अपने गौरवपूर्ण अतीत साथ ही वर्तमान अधोगति पर गया। धार्मिक-सामाजिक सुधार आंदोलनों के द्वारा समाज को नई प्रेरणा मिली और आर्थिक शोषण तथा दुर्दशा ने राजनीतिक चेतना जगाई। स्वतंत्र ढंग से विचार करने की परिस्थिति बनी। परिणामतः कविता राज्याश्रय, सामंतों-धनिकों से हटकर मध्यवर्ग, दीन-दलितों, किसानों-मज़दूरों तक पहुँची। सामयिक समस्याओं और संघर्षों का चित्रण होने लगा।

आधुनिक काल के संदर्भ में दो महत्त्वपूर्ण बातें याद रखनी चाहिए। एक तो यह कि छापेखानों के आने और नए ज्ञान-विज्ञान से परिचय के बाद हिंदी गद्य में भी विभिन्न विधाओं में लेखन प्रारंभ हुआ। दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह कि गद्य-पद्य दोनों के लिए दिल्ली-मेरठ में बोली जाने वाली खड़ी बोली में लेखन होने लगा। आधुनिक काल के पूर्व हिंदी क्षेत्र के भिन्न-भिन्न भाषाओं में काव्य-रचना होती रही थी, जैसे मैथिली,

अवधी, ब्रजभाषा, राजस्थानी आदि। हाँ, आदिकाल के गोरखनाथ अमीर खुसरो की भाषा इसी खड़ी बोली का पूर्व रूप थी।

यहाँ हम आधुनिक काल के काव्य-विकास पर ही ध्यान केंद्रित करेंगे। इस काल की परिस्थितियाँ तेजी से बदलती रही हैं इसलिए इस काल की कविताओं के विषय और स्वर भी बदलते रहे हैं। डेढ़ सौ वर्ष से भी लंबे आधुनिक काल के प्रारंभ के कई वर्षों तक को हम उस समय के ऐसे महत्त्वपूर्ण साहित्य-सेवियों के नाम से याद करते हैं जिन्होंने हिंदी के विकास में मूल्यवान योगदान किया। बाद में काव्य-शिल्प, काव्य-चेतना और काव्य-विषयों को ध्यान में रखकर उन काव्यांदोलनों के नाम से उन कालखंडों को जाना जाने लगा।

आधुनिक काल के काव्य-विकास को हम भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता तथा समकालीन कविता के उप-शीर्षकों में बाँटकर देखते-पढ़ते हैं।

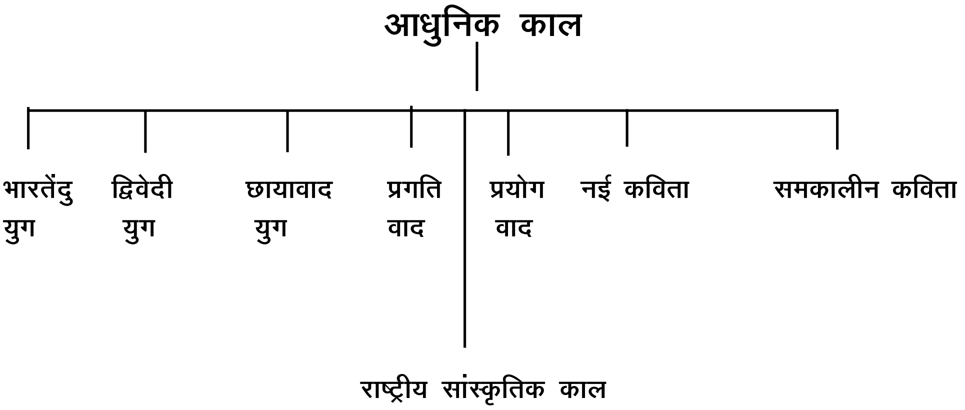

आइए, क्रमशः इनसे हम परिचित हो लें तथा इस काल के प्रतिनिधि कवियों के बारे में जानकारी प्राप्त करें।

1. भारतेंदु युग

सन् 1850 से 1900 तक के आधुनिक हिंदी काव्य को हम भारतेंदु युग के अंतर्गत रखते हैं। 1870 के आसपास भारतेंदु की प्रारंभिक रचनाएँ प्रकाशित होने लगीं। अपनी 'कालचक्र' नामक पुस्तक में भारतेंदु ने नोट किया: 'हिंदी नए चाल में ढली, सन 1873 ई.'।

सन् 1850 ई. से आधुनिक काल का प्रारंभ होता है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने ब्रजभाषा में कविताएँ लिखीं और गद्य-लेखन में खड़ी बोली का प्रयोग किया। पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुईं, अनेक साहित्यिक संस्थाएँ बनीं। भारतेंदु की प्रेरणा से ही हिंदी-जगत् में राष्ट्रीय-सांस्कृतिक वातावरण बना तथा अनेक लेखकों ने इनके दिखाए मार्ग पर चलकर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। भारतेंदु के इन महत्त्वपूर्ण कार्यों के कारण ही इस कालखंड को **भारतेंदु युग** कहा गया।

यह युग हिंदी का प्रवेश-द्वार है। अंग्रेज़ी शासन स्थापित हो जाने पर देशी उद्योग-धंधे चौपट होने लगे। वे भारत का कच्चा माल अपने देश में ले जाकर उनसे बने सामान भारत में ही महँगी कीमत पर बेच रहे थे। राजनीतिक अत्याचारों और आर्थिक शोषण

के दो पाटों के बीच जनता पिस रही थी। महँगाई और अकाल से भारतीयों की कमर टूट रही थी। हिंदू समाज में प्रचलित कुरीतियों, जैसे– बाल-विवाह, छुआछूत, धार्मिक बाह्याडंबरों के खिलाफ़ लोगों में जागरूकता आ रही थी। इस नई चेतना से भरकर कवियों ने अपनी कविताओं में तत्कालीन दुर्दशा का चित्रण कर जनता को जगाने का काम किया। अतीत का गौरव-गान भी किया गया। इस युग का काव्य बहुरंगी है। इस युग में भक्ति के पद, श्रृंगार रस के सवैये और कवित्त नीतिपरक रचनाएँ भी मिलती हैं और राजभक्ति, देशभक्ति, समाज-सुधार तथा तत्कालीन जीवन की सच्चाई को उजागर करने वाली कविताएँ भी मिलती हैं। एक ओर आदर्श है तो दूसरी ओर यथार्थ, एक तरफ़ अलंकारों के प्रति मोह, पुराने छंदों का प्रयोग, चली आती काव्यभाषा (ब्रजभाषा) में कविता लिखने की प्रवृत्ति है, तो दूसरी ओर लोक-छंदों का प्रयोग भी है।

भारतेंदु युग के काव्य की विशेषताएँ

देशभक्ति और राजभक्ति का मिला-जुला भाव

इस युग के कवि एक ओर अंग्रेज़ी शासन में शांति, सुव्यवस्था, नए आविष्कारों-विचारों की प्रशंसा करते हैं, दूसरी ओर देश के नैतिक पतन और आर्थिक दुर्दशा पर आँसू बहाते हैं। **भारतेंदु** ने लिखा :

आवहु, सब मिलि के रोवहु भारत-भाई।
हा!हा! भारत-दुर्दशा न देखी जाई।
तथा
अंगरेज-राज सुख-साज सजै सब भारी,
पै धन बिदेस चलि जात यहै अति ख्वारी।

जनजीवन का चित्रण तथा सुधार का स्वर

इस काल के अधिकांश कवि पत्रकार भी थे। वे नई चेतना और सुधार की भावना से भरे थे, अतएव उन्होंने बाल-विवाह, छुआछूत, पुलिस, भ्रष्टाचार, अकाल, कर, महामारी आदि पर चोट करने के साथ ही धार्मिक आडंबरों आदि की भी निंदा कर जनता को जगाने का यत्न किया।

प्रकृति-चित्रण

इस युग के कवियों ने प्रकृति का चित्रण प्रायः उद्दीपन के रूप में किया है अर्थात् संयोग के क्षणों में यह नायक-नायिका के सुख को बढ़ाती है तो वियोग के क्षणों में विरह-वेदना को। यत्र-तत्र आलंबन के रूप में जो प्रकृति-चित्रण हुआ है उसमें संवेदना कम, विवरणात्मक चित्रण अधिक है। उदाहरण के लिए भारतेंदु के 'यमुना-वर्णन' को देखा जा सकता है।

इतिवृत्तात्मकता की प्रधानता

इस युग के काव्य में देशोद्धार की भावना अधिक है, काव्यत्व कम। अनुभूति की

गहराई, संवेदना की तीव्रता की जगह इतिवृत्तात्मकता (सपाट, सीधे ढंग का वर्णन) है। यत्र-तत्र व्यंग्य-विनोद ने कथन में पैनापन अवश्य ला दिया है। **भारतेंदु** की एक मुकरी देखें:

बाहर-बाहर सब रस चूसै
भीतर से तन-मन-धन मूसै
जाहिर बातन में अति तेज
क्यों सखि, साजन? नहिं, अंगरेज।

प्रतापनारायण मिश्र की 'हर गंगा' और 'बुढ़ापा' आदि में भी ऐसा ही व्यंग्यात्मक-स्वर है।

प्रमुख विशेषताएँ
- देशभक्ति और राजभक्ति का समन्वय
- जनजीवन का चित्रण और सुधार पर बल
- प्रकृति का उद्दीपन-रूप में या यथार्थ चित्रण
- इतिव त्तात्मकता
- काव्य में ब्रजभाषा का ही प्रयोग
- परंपरागत छंदों का प्रयोग

भाषा

भारतेंदु-युग में गद्य खड़ी बोली में लिखा जाने लगा, किंतु काव्य-लेखन प्रायः ब्रजभाषा में ही होता रहा।

ब्रजभाषा-काव्य के परंपरागत छंदों तथा लोक छंदों का प्रयोग

कवित्त, सवैया, छप्पय, दोहा आदि ब्रजभाषा के प्रचलित छंदों के प्रयोग के साथ-साथ, जनजीवन से जुड़ाव के कारण, कवियों ने लावनी, कजली, बिरहा, मल्हार, ठुमरी, कहरवा, चैती जैसे लोक छंदों में भी काव्य-रचना की। संस्कृत के वर्ण-वृत्तों के साथ-साथ ग़ज़ल के प्रयोग भी हुए। इसके साथ-साथ अंग्रेज़ी और बांग्ला के छंदों का प्रयोग भी मिलता है।

इस काल के प्रमुख कवि हैं – भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रतापनारायण मिश्र, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन' और अंबिकादत्त व्यास।

पाठगत प्रश्न 25.6

1. निम्नलिखित कथनों के आगे सही (√) या गलत (X) का निशान लगाइए :
   (क) आधुनिकता केवल समय की होती है। ( )
   (ख) आधुनिक काल में विदेशी शिक्षा तथा विचारों के संपर्क में आने से जनता जागरूक हुई और उसका ध्यान अपनी वर्तमान अधोगति तथा गौरवपूर्ण अतीत की ओर गया। ( )
   (ग) आधुनिक काल की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता खड़ी बोली का काव्य-भाषा के रूप में प्रयोग है। ( )
   (घ) आधुनिक काल की कविता को हम भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद तथा नई कविता के उपशीर्षकों में बाँटकर देखते-पढ़ते हैं। ( )
2.. रिक्त स्थानों को भरिए–
   (क) भारतेंदु युग का आरंभ सन् ....में और अंत सन्.............में होता है।

(ख) भारतेंदु युग में भक्ति और शृंगार के साथ-साथ ....और ....की कविताएँ लिखी गईं।

(ग) भारतेंदु युग के काव्य की भाषा .... थी।

(घ) इस युग के काव्य में काव्यत्व कम .... अधिक है।

(ङ) इस काल के सर्वप्रमुख कवि हैं ....।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) इस युग को भारतेंदु युग क्यों कहा गया?

(ख) नई चेतना जगाने का मुख्य कारण क्या था?

(ग) भारतेंदु युग में किन दो धाराओं का समन्वय हुआ?

2. द्विवेदी युग

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक 18 वर्षों, सन् 1900 से 1918 ई. के समय को हिंदी साहित्य के इतिहास में 'द्विवेदी युग' के नाम से जाना जाता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र के बाद हिंदी को आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के रूप में प्रखर साहित्य सेवी मिला। सन् 1900 में हिंदी की साहित्यिक पत्रिका 'सरस्वती' का प्रकाशन आरंभ हुआ। सन् 1903 में द्विवेदी जी ने इसका संपादन भार सँभाला और सन् 1920 तक इस पद पर बने रहे। 'सरस्वती' के माध्यम से उन्होंने हिंदी भाषा को निखारा और नए कवियों को प्रेरणा दी, उन्हें तैयार किया और अपने समय की साहित्यिक चेतना को नई दिशा दी। इसीलिए उन्हीं के नाम से इस काल-खंड को **'द्विवेदी युग'** कहा जाता है।

राजनीति के क्षेत्र में गोखले, तिलक और फिर गांधी के आने से राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता की भावना बलवती हो रही थी। 'आर्य समाज' के द्वारा दयानंद सरस्वती सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक रूढ़ियों पर आघात कर रहे थे। सारा वातावरण सुधार की भावनाओं से भरा था। ऐसे में शृंगार की कविताओं, नीतिपरक सूक्तियों, समस्या पूर्तियों (किसी एक पंक्ति के आधार पर काव्य-रचना) में लोगों की रुचि नहीं रह गई थी। अतः हिंदी कविता ने भी करवट बदली और विषय तथा शिल्प की दृष्टि से उसमें परिवर्तन आया। **मैथिलीशरण गुप्त** की ये पंक्तियाँ देखें –

हम कौन थे, क्या हो गये और क्या होंगे अभी,
आओ विचारें आज मिलकर, ये समस्याएँ सभी।

('भारत भारती' से)

द्विवेदी युग के काव्य की विशेषताएँ

समाज-सुधार

आर्यसमाज तथा अन्य सुधारवादी आंदोलनों और महात्मा गांधी के विचारों-आंदोलनों से प्रभावित होकर इस युग के कवियों ने बाल-विवाह, दहेज, छुआछूत, स्त्री-अशिक्षा जैसी सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया तथा विधवा-विवाह, नारी-शिक्षा, वेश्या-उद्धार आदि का समर्थन किया।

सामान्य जन का चित्रण

पहले ईश्वर, ईश्वर के अवतार, राजा, अमीर-उमरा, योद्धा और सुंदरी-स्त्रियाँ आदि काव्य का विषय हुआ करते थे। इस युग में किसान-मज़दूर, अछूत, साधारण स्त्री, विधवा आदि की करुणा और दीनता का चित्रण किया गया अर्थात् सामान्य जन काव्य का विषय बना।

मानवतावाद

ऐसा नहीं है कि इस युग के कवि ईश्वर के प्रति आस्थावान् नहीं थे, किंतु अब वे भगवान् के कोरे गुणगान, मूर्तिपूजा और धार्मिक अनुष्ठानों की जगह दीन-दलितों की सेवा, मानव-प्रेम आदि को सच्ची ईश्वरभक्ति मानने लगे थे। जैसे :

जग की सेवा करना ही बस
है सारे सारों का सार।

नीति और आदर्श

नीतिमयता और मर्यादा भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। इस काल के कवियों के कथा-काव्यों के पात्र उदार आचरण और व्यवहार वाले हैं तथा कथा के अंत में नीति और आदर्श का रंग है। पौराणिक तथा ऐतिहासिक प्रसंग इसी दृष्टि से चुने गए हैं। सर्वत्र सत् जीतता है, असत् हारता है तथा ऊँचे आदर्शों के लिए पात्र अपना सर्वस्व बलिदान करते हैं। इन कविताओं का लक्ष्य केवल मनोरंजन करना न होकर पाठकों को आदर्श पर चलने की प्रेरणा देना था। अतः इन कथा-काव्यों में चित्रित प्रेम भी वासनापूर्ण तथा उदात्त न होकर त्याग-बलिदान की भावनाओं से परिपूर्ण है।

बौद्धिकता

इस काल के कवि यह समझ रहे थे कि विज्ञान और तर्क के इस युग में पुरानी आस्थाएँ डगमगा रही हैं। अतएव उन्होंने अपने समय की धारा के मेल में अपने पात्रों और प्रसंगों को मानवीय और विश्वसनीय बनाया। मैथिलीशरण गुप्त के राम (साकेत) अवतार होकर स्वर्ग का संदेश नहीं लाए हैं। बल्कि भूतल को ही स्वर्ग बनाने आए हैं। 'हरिऔध' की राधा ('प्रिय-प्रवास') समाज-सेविका है। उनके कृष्ण कनिष्ठिका पर गोवर्धन को धारण नहीं करते बल्कि उनके पराक्रम और सेवा-कार्य से आश्चर्यचकित ब्रजवासी कह उठते हैं कि लगता है कृष्ण ने पहाड़ ही उठा लिया है।

प्रकृति-वर्णन

इस युग के काव्य में प्रकृति का सजीव, संवेदनशील, मानव के सुख-दुख में सहभागी के रूप में चित्रण नहीं के बराबर हुआ है। मात्र उद्दीपन के रूप में भी चित्रण नहीं हुआ है। यत्र-तत्र स्वतंत्र प्रकृति-चित्रण मिलता है, वह भी ग्रामीण परिवेश का अधिकांश चित्रण इतिवृत्तात्मक ही है।

काव्य-रूप

इस युग में कथा-काव्यों की प्रधानता रही। 'साकेत' (गुप्त जी), 'प्रियप्रवास' (हरिऔध जी) जैसे महाकाव्य, 'जयद्रथ वध' (गुप्त जी) जैसे खंडकाव्य इसी समय में लिखे गए। छोटे-छोटे विषयों पर मुक्तक और कुछ गीत भी लिखे गए।

टिप्पणी

भाषा

हम जान चुके हैं कि भारतेंदु-युग में गद्य तो खड़ी बोली में लिखा जाने लगा था, परंतु पद्य-लेखन ब्रजभाषा में ही हो रहा था। वे खड़ी बोली को रूखी कहकर काव्य के लिए अनुपयुक्त ठहराते थे। द्विवेदी जी के प्रयत्नों से अब कविताएँ भी खड़ी बोली में लिखी जाने लगीं। जब बात खड़ी बोली के प्रयोग (भाषा-प्रयोग) पर हो तो स्पष्ट है कि कविता बहुत मार्मिक-भावात्मक नहीं बन पाएगी। द्विवेदी युग की कविताएँ प्रायः इतिवृत्तात्मक हैं। मैथिलीशरण गुप्त जैसे कवियों ने खड़ी बोली का काव्य-भाषा के रूप में निरंतर प्रयोग करते हुए कविता को भी निखारा। इस तरह से द्विवेदी युग में काव्य-लेखन पूर्णतः खड़ी बोली में होने लगा और कविता धीरे-धीरे इतिवृत्तात्मकता की कैद से भी निकलने लगी। हालाँकि ब्रजभाषा-प्रेमी कवि अभी भी अपनी राह चलते रहे।

छंद

इस युग की एक अन्य विशेषता विविध छंदों का प्रयोग है। ब्रजभाषा के कवि तो पारंपरिक कवित्त और सवैया छंदों में ही लिखते रहे। 'हरिऔध' ने संस्कृत के वर्णवृत्तों और उर्दू के चौपदों ('चुभते चौपदे') में कविता लिखी। मैथिलीशरण गुप्त ने हरिगीतिका आदि अपेक्षाकृत कम प्रचलित छंदों का भी कुशलता से प्रयोग किया और (संस्कृत की शैली वाले) अतुकांत छंद भी रचे।

द्विवेदी युग के प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ

इस युग के कवियों में नाथूराम शर्मा 'शंकर' (शंकर-सर्वस्व), श्रीधर पाठक (कश्मीर-सुषमा, भारत-गीत), अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (प्रिय प्रवास, वैदेही वनवास, चोखे चौपदे), मैथिलीशरण गुप्त (भारत भारती, जयद्रथ वध, 'साकेत', 'यशोधरा') तथा रामनरेश त्रिपाठी (मिलन, पथिक) को भुलाया नहीं जा सकता। इनमें भी सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हैं मैथिलीशरण गुप्त।

गुप्त जी ने अपने काव्य में भारत के प्राचीन गौरव को याद दिलाया, वर्तमान के प्रति निराशा प्रकट की, किंतु भविष्य के लिए आशा का संदेश देते रहे। सौभाग्य से उन्होंने लंबी आयु पाई और अंत तक वे राष्ट्र की उन्नति की प्रेरणा देने वाले काव्य रचते रहे। इसीलिए आदर देने को उन्हें राष्ट्रकवि कहा गया। 'भारत भारती' का प्रकाशन सन् 1912 में हुआ और उन्हें इससे देशव्यापी ख्याति मिली। गुप्त जी के काव्यों के विषय प्रायः पौराणिक और ऐतिहासिक हैं। अपने कथा-काव्यों में उन्होंने बार-बार देश-प्रेम, स्वतंत्रता, नारी-गौरव, अछूतोद्धार जैसे ज्वलंत विषयों को वाणी दी।

द्विवेदी युग की प्रमुख विशेषताएँ

- समाज-सुधार
- सामान्य जन का चित्रण
- मानवतावाद
- नीति और आदर्श
- बौद्धिकता
- प्रकृति-वर्णन
- काव्य-रूप
- काव्य-भाव के रूप में खड़ी बोली का प्रयोग
- छंदों का प्रयोग

पाठगत प्रश्न 25.7

1. निम्नलिखित वाक्यों के आगे उनकी स्थिति के अनुसार सही (√) या गलत (X) के चिह्न लगाइए :

   (क) द्विवेदी-युग का नाम हजारीप्रसाद द्विवेदी के नाम पर पड़ा। ( )

   (ख) द्विवेदी-युग की प्रमुख पत्रिका 'सरस्वती' थी। ( )

(ग) द्विवेदी-युग की काव्य-भाषा ब्रजभाषा थी। ( )

(घ) गांधी जी और आर्यसमाज से यह युग अत्यंत प्रभावित था। ( )

(ङ) इस युग की कविता का प्रधान स्वर राष्ट्रीयता था। ( )

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) द्विवेदी-युग के काव्य की तीन विशेषताएँ लिखिए।

(ख) इस युग के तीन प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।

(ग) इस युग में रचे दो महाकाव्यों के नाम बताइए।

---

3. छायावाद युग (1918-1938)

छायावाद युग का आरंभ 1918 से माना जाता है। कुछ लोग इसमें अंग्रेज़ी और बांग्ला के रोमांटिसिज़्म और मिस्टिसिज़्म का प्रभाव देखते हैं तो कुछ द्विवेदी युगीन इतिवृत्तात्मकता से मुक्ति तथा खड़ी बोली कविता के परिष्कार के रूप में इसका मूल्यांकन करते हैं। निश्चित ही छायावादी काव्य अपने पूर्ववर्ती काव्य से अनेक स्तरों पर नितांत भिन्न था। यह कविता मनुष्य की आंतरिक भावनाओं को व्यक्त करने में कविता की सार्थकता तलाश कर रही थी। इसीलिए इसे 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह भिन्न भी कहा गया। शुरू में, पारंपरिक कविता से भिन्न होने के कारण इसे हल्का–फुल्का और भिन्न ढंग से लिया गया। **'छायावाद'** नाम भी इसी का परिणाम है। यद्यपि बाद में खुद छायावादी कविताओं ने न सिर्फ़ इस नाम को स्वीकारा बल्कि अपने तरह से अपनी कविताओं की विशेषता के संदर्भ में इसकी व्याख्या भी प्रस्तुत की। प्रसाद, पंत, निराला तथा महादेवी वर्मा छायावाद के आधार स्तंभ हैं। छायावाद की उपलब्धियों के आधार पर इसे आधुनिक हिंदी कविता का 'स्वर्णिम काल' माना जाता है।

तत्कालीन परिस्थितियाँ

गांधी जी की अगुवाई में चल रहा स्वतंत्रता आंदोलन अपने संघर्ष काल में था। देश में पश्चिमी अर्थव्यवस्था, औद्योगीकरण और संस्कृति का प्रभाव दिखाई दे रहा था। सामंती व्यवस्था टूट रही थी और तेज़ी से शहरीकरण की प्रक्रिया शुरू हो चुकी थी। लेकिन सामाजिक मूल्य व्यवस्था अपनी जगह बरकरार थी। व्यक्ति की निजी ज़िंदगी में समाज संस्थाओं की भूमिका सहयोग के स्तर पर कम हो रही थी जबकि तमाम निर्णायक मुद्दों पर उसे उन संस्थाओं से नियंत्रित होना पड़ता था। फलतः व्यक्ति का मन छटपटाहट के दौर से गुज़र रहा था। कवि-साहित्यकार तथा अन्य प्रबुद्ध जन धर्म के आचार-पक्ष की अपेक्षा उसके विचार-पक्ष (भारतीय दर्शन) की ओर आकृष्ट हो रहे थे। अद्वैतवाद (जीवात्मा और परमात्मा एक हैं, सब में वही ईश्वर समाया है) तथा सर्वात्मवाद (सभी जगह एक ही आत्मा का निवास है) का प्रभाव हमारे चिंतन पर पड़ रहा था। पश्चिमी विचारों से प्रभावित, अपेक्षाकृत समृद्ध जीवन जी रहे पढ़े-लिखे लोग समाज में व्याप्त रूढ़ियों-अंधविश्वासों से खिन्न थे, किंतु उनसे मुक्ति का वातावरण अभी नहीं बना था, अतः वे भीतर-भीतर घुटन का अनुभव कर रहे थे। पश्चिमी मानवतावाद तथा शैली, कीट्स, वर्ड्सवर्थ जैसे अंग्रेज़ी कवियों का काव्य उभरते कवियों को प्रभावित कर रहा

था। द्विवेदी युग के काव्य की नीरसता के विरुद्ध विद्रोह की भावना पनप ही रही थी। इन सब के मिले-जुले परिणाम में एक नई काव्यधारा चल निकली जिसे हम **छायावाद** कहते हैं।

छायावादी काव्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ

वैयक्तिकता

दो महायुद्धों के बीच बढ़ते औद्योगीकरण और धार्मिक-सामाजिक रूढ़ियों के दमघोंटू वातावरण के प्रति लोगों के भीतर सुलगते विद्रोह के भाव ने उन्हें परंपरा से हटकर नए सिरे से विचार करने का महत्त्व समझाया। कविगण बाहरी दुनिया के साथ-साथ अपने दुख-सुख सुनाने को भी बेचैन हुए। परिणामतः छायावादी कविता बहिर्मुखी न होकर अंतर्मुखी होती गई। 'प्रसाद' के 'आँसू', पंत के 'उच्छ्वास' तथा 'निराला' और महादेवी वर्मा के गीतों में हृदय का यही विषाद और अवसाद का वैयक्तिक स्वर व्यक्त हुआ है, किंतु ये कवि इतने कुशल हैं कि निजी अनुभूतियों को जगत् से जोड़ देते हैं। निराला की निम्न पंक्तियों को देखें:

देखा दुखी एक निज भाई
दुख की छाया पड़ी हृदय पर मेरे
झट उमड़ वेदना आई
मैंने 'मैं' शैली अपनाई।

सौंदर्य और प्रेम

छायावादी कवि संवेदनशील थे और उनकी दृष्टि भी सूक्ष्म थी। प्रकृति और नारी दोनों का सौंदर्य उन्हें आकृष्ट करता था, इसीलिए उनके काव्य में नारी और प्रकृति के बड़े आकर्षक चित्रण हुए हैं। छायावादी कवि प्रकृति को जड़ नहीं, चेतन मानते है। नारी के बाह्य रूप की अपेक्षा उसके आंतरिक गुणों (त्याग, कोमलता, सहृदयता आदि) पर उसकी दृष्टि गई है। जहाँ नारी के बाहरी आकर्षण का चित्रण है वहाँ भी उसमें वैसी स्थूलता नहीं है। 'कामायनी' में श्रद्धा के सौंदर्य का वर्णन, जयशंकर प्रसाद ने इस प्रकार किया है :

नील परिधान बीच सुकुमार
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग,
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघ वन बीच गुलाबी रंग।

रहस्यवाद

छायावादी कवियों ने प्रकृति में चेतना का आरोप किया है। उन्हें कण-कण में अनंत सत्ता की उपस्थिति प्रतीत होती है। उस परम सत्ता से वियोग की वेदना है इनमें। अंत में वे उस परमसत्ता के दर्शन अपने अंतर्जगत् में ही प्राप्त कर संतुष्ट हो लेते हैं :

तरी को ले जाओ मँझधार
डूब कर हो जाओगे पार;
विसर्जन ही है कर्णाधार
वही पहुँचा देगा उस पार! **(महादेवी)**

राष्ट्रीय भावना

छायावादी काव्य पर जीवन से पलायन का आरोप लगाया जाता रहा है *('ले चल मुझे भुलावा देकर/मेरे नाविक, धीरे-धीरे।' – प्रसाद),* किंतु देशप्रेम और राष्ट्रीय गौरव को भी छायावादी कवियों ने वाणी दी है। प्रसाद के 'लहर' संकलन की अनेक कविताओं और उनके नाटकों में राष्ट्रीय भाव के अनेक प्रेरक गीत हैं

अरुण यह मधुमय देश हमारा ....'

या।

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती ....

निराला जी का यह गीत भी भुलाने लायक नहीं है–

वर दे, वीणावादिनी वरदे

मानवतावाद

छायावादी कवि रवींद्रनाथ ठाकुर की लोकप्रियता से आकृष्ट थे। बंग्ला मनीषी रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद आदि से भी ये प्रेरित हुए और उनसे रचनात्मक ऊर्जा ली। एक अंतर्राष्ट्रीय चेतना भी उस समय जाग रही थी। इन सभी के प्रभाव में छायावादी काव्य में विश्व-प्रेम की भावना मिलती है तथा जाति-धर्म जैसी संकीर्णताओं से ऊपर उठने का शंखनाद भी सुनाई देता है। प्रसाद जी की 'कामायनी' में मनु को प्रेरित करते हुए श्रद्धा कहती है :

शक्ति के विद्युत्कण, जो व्यस्त
विकल बिखरे हैं, हो निरुपाय;
समन्वय उसका करो समस्त
विजयिनी मानवता हो जाए।

भाषा तथा शैलीगत विशेषताएँ

डॉ. नगेंद्र ने छायावाद को 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह' कहा है। विभिन्न आलोचकों ने छायावाद को द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मकता की प्रतिक्रिया का परिणाम बताया है। स्वयं कवि प्रसाद ने संस्कृत प्रयोगों के साक्ष्य पर 'छाया' की व्याख्या करते हुए कहा था – 'मोती के भीतर छाया की जैसी तरलता'' 'छाया' का अर्थ पानी अर्थात् आब, चमक, कांति लिए हुए। उन्होंने निष्कर्षत: कहा, ''छाया भारतीय दृष्टि से अनुभूति और अभिव्यक्ति की भंगिमा पर अधिक निर्भर करती है।'' छायावादी काव्य की शैली और इसके शिल्प को देखते हुए ये बातें ठीक लगती हैं। छायावादी काव्य मुख्यत: प्रबंध-काव्य न होकर, गीति-काव्य है ('कामायनी' और 'लोकायतन' अपवाद हैं)। छायावादी काव्य में मुक्तक गीतों और लंबी कविताओं की प्रधानता है। इन कविताओं की भाषा की विशेषता है वक्रता, व्यंजना का प्रयोग, बात को सांकेतिक शैली में कहना :

वह मेरे प्रेम विहँसते
जागो, मेरे मधुबन में

यहाँ प्रातः कालीन बिंबों के बीच जागरण-वेला का चित्रण है। यह जागना केवल नींद से जागना नहीं, चेतना के स्तर पर जागना है *(जगे हम, लगे जगाने विश्व/लोक में फैला फिर आलोक'*–प्रसाद)। छायावादी काव्य में अलंकारों का प्रयोग चमत्कार पैदा करने के लिए नहीं, कथन को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए किया गया है। 'कामायनी' की पंक्ति है : *'सिंधुसेज पर धरा वधू अब, तनिक संकुचित बैठी सी'* – यहाँ रूपक भी है और पृथ्वी का चित्रण वधू के रूप में करके उसका मानवीकरण किया गया है।

टिप्पणी

अनुभूति की तीव्रता, रम्य कल्पना, भाषा की वक्रता और गीतिमयता ने छायावाद को अभूतपूर्व गौरव प्रदान किया है। छायावादी काव्य पर पलायन का जो आरोप लगाया जाता रहा है, वह आंशिक रूप से ही सत्य है। छायावादी कविताओं में पुनर्जागरण की चेतना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। शक्ति के आह्वान की अनेक महत्त्वपूर्ण कविताएँ इस धारा के अंतर्गत लिखी गई हैं। निराला की लंबी कविता 'राम की शक्तिपूजा' इसका अन्यतम उदाहरण है। डॉ. नगेंद्र ने ठीक कहा है कि *'इस कविता का गौरव अक्षय है।'*

छायावादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं –

1. व्यक्तिवाद
2. सौंदर्य तथा प्रेम
3. रहस्यवाद
4. राष्ट्रीय भावना
5. मानवतावाद
6. विशेष प्रकार की शैली

मुक्त छंद

हम पहले जान चुके हैं छायावादी कविता ने पूर्ववर्ती काव्य की परिपाटी से अनेक स्तरों पर मुक्ति का प्रयास किया। कविता की विषयवस्तु, भाषा, शैली के साथ-साथ यह बात छंद पर भी लागू होती है। परंपरागत छंदों के यथारूप प्रयोग, उनमें बदलाव से लेकर मुक्त छंद तक का प्रयोग इन कवियों ने किया। निराला मुक्त छंद के आरंभकर्ता माने जाते हैं। उनका मानना था कि 'मनुष्यों की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। यह मुक्ति मात्रा के बंधनों को त्यागने में है। निराला ने कविता के प्रवाह और लय को महत्त्वपूर्ण माना। उनकी कविता 'जूही की कली' शुरू में स्वीकार नहीं की गई। इस तरह की कविता का ''रबड़ छंद'', केंचुआ छंद' आदि कह कर उपहास किया गया, किंतु जैसाकि आप आगे जानेंगे, मुक्त छंद ही बाद की हिंदी कविता का आधार बना। आपके इस पाठ्यक्रम में निर्धारित निराला की कविता 'तोड़ती पत्थर' मुक्त छंद की ही रचना है।

पाठगत प्रश्न 25.8

1. निम्नलिखित कथनों के आगे सही (√) अथवा ग़लत (X) का चिह्न लगाइए:
   (क) छायावादी काव्य में छाया का वर्णन किया गया है। ( )
   (ख) छायावादी कविता द्विवेदीयुगीन कविता की इतिवृत्तात्मकता के विरुद्ध विद्रोह की कविता है। ( )
   (ग) निराला के काव्य में छायावादी काव्य की कोमलता भी है और शोषण के विरुद्ध विद्रोह का स्वर भी। ( )

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :
   (क) छायावादी कविता की तीन विषयगत विशेषताएँ लिखिए।
   (ख) छायावादी कविता की भाषा-शैली की दो विशेषताएँ लिखिए।
   (ग) छायावादी कविता के चार प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।

---

4. राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्य-धारा

अंग्रेज़ों के शासन में भारत आर्थिक-राजनीतिक अत्याचार, शोषण और दमन का संकट झेल रहा था। स्वतंत्रता की कामना देशवासियों में बलवती होती जा रही थी। अंततः उनका क्षोभ और आक्रोश स्वतंत्रता-संग्राम के रूप में फूट पड़ा। हमारे देश में जो राष्ट्रीयता की भावना उभरी उसकी तीन मुख्य बातें हैं :

1. पराधीनता की ग्लानि और उससे मुक्त होने की इच्छा तथा प्रयास।
2. देश की मुक्ति तथा उद्धार के लिए एकता, स्वाभिमान और आत्मविश्वास की भावना तथा स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिए देश के गौरवपूर्ण अतीत का स्मरण।
3. आधुनिक जीवन-मूल्यों के आलोक में वर्तमान व्यवस्था पर पुनर्विचार तथा उसका पुनर्गठन।

राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा के कवियों में चिंतक-विचारक, समाज-सुधारक, देश-प्रेमी का रूप प्रबल है।

मैथिलीशकरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा, 'नवीन, 'एक भारतीय आत्मा', माखनलाल चतुर्वेदी आदि कवियों ने स्वतंत्रता-संघर्ष में योगदान किया और जेल यातना भोगी। परिणामस्वरूप यत्र-तत्र क्रांति और विद्रोह के स्वर भी कविता में आए। गुप्त जी ने भारत के गौरवपूर्ण अतीत का बार-बार स्मरण कराया, माखनलाल चतुर्वेदी मातृभूमि के लिए शीष चढ़ाने वालों को ही असली श्रद्धा-पात्र मानते हैं और ब्रिटिश राज्य के गहनों (हथकड़ियों) को तोड़ने के लिए आतुर हैं। 'नवीन' शोषित-पीड़ितों, भूखे-नंगों को जगाने के लिए शंखनाद करते हैं, रामनरेश त्रिपाठी ग़रीबों की सेवा को ही सच्ची ईश्वर-भक्ति समझते हैं और दिनकर 'दिल्ली' जैसी कविता के माध्यम से अतीत का गौरव-गान भी करते हैं और वर्तमान दुर्दशा पर क्षोभ भी प्रकट करते हैं। इन राष्ट्रवादी भावधारा के कवियों में से अधिकांश गांधीवादी थे और सत्य-अहिंसा सांप्रदायिक सद्भाव के आदर्शों का पूर्णतः पालन करने वाले थे, यद्यपि कुछ सशस्त्र क्रांति के समर्थक भी थे :

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ
जिससे उथल-पुथल मच जाए।

दिनकर जैसे कवियों ने महाजनी शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाई :

हटो व्योम के मेघ पंथ से, स्वर्ग लूटने हम आते हैं।
दूध-दूध ओ वत्स, तुम्हारा दूध खोजने हम आते हैं।

हिंदी की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक धारा की रचनाएँ मुख्यतः दो प्रकार की है:

1. तात्कालिक समस्याओं-राजनीतिक परतंत्रता, सामाजिक कुरीतियों, आर्थिक शोषण, ग़रीबी – से संबंधित। इनका लक्ष्य जनता को जगाना, तात्कालिक लक्ष्य-सिद्धि के

लिए जन-चेतना पैदा करना है।

2. शाश्वत जीवन-मूल्यों– आपसी भाईचारा, समता, न्याय, बुद्धि और हृदय का समन्वय, अहंकार से मुक्ति, सेवा-भाव, सहिष्णुता, धर्म-निरपेक्षता आदि पर बल देने वाली कविताएँ।

इस धारा की कविताओं के मूल में पीड़ा की अनुभूति है, चूँकि इनका उद्देश्य जन-चेतना पैदा करना है, अतः वैचारिकता और उपदेशात्मकता अधिक है। अर्थात् कवित्व पर चिंतक, सुधारक, देश-प्रेमी का रूप हावी है। अतः काव्य-कला की दृष्टि से यह बहुत श्रेष्ठ कोटि का काव्य नहीं है।

5. उत्तर छायावाद तथा प्रगतिवाद काव्य

छायावाद और प्रगतिवाद के बीच प्रखर कवियों की जमात हमें मिलती हैं जिनकी चर्चा के बिना हिंदी काव्य का इतिहास पूरा नहीं होता। पहले रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' (लाल चूनर) और फिर हरिवंश राय 'बच्चन' (निशा निमंत्रण, मधुशाला आदि) के आने से यह नया परिदृश्य सामने आता है। इस दौर के कवियों की अपनी-अपनी मानसिकता है, किंतु एक सामान्य बात यह है कि इन कवियों ने जीवन के अनुभव को सीधी-सरल भाषा में अभिव्यक्त किया। भगवतीचरण वर्मा, बच्चन, सुमन, अंचल आदि की कविताएँ इस प्रसंग में स्मरणीय हैं। एक तरह से कहें तो छायावादी और प्रगतिवादी काव्य के बीच की जगह को इन कवियों ने पाटा है। इनके स्वर मिले-जुले हैं। आइए इस कविता की कुछ बानगी देखें:

उत्तर छायावादी कवियों ने जीवनानुभवों को सीधी-सरल भाषा में अभिव्यक्त किया।

है चिता की राख कर में माँगती सिंदूर दुनिया
आज मुझसे दूर दुनिया
X X X
मंदिर-मस्जिद बैर कराते
मेल कराती मधुशाला......... **–बच्चन**

मोटे तौर पर राजनीति की भाषा में जो मार्क्सवाद है, कविता की भाषा में वह 'प्रगतिवाद' है। 1936 ई. तक भारत में अंग्रेज़ी शासन के संरक्षण में व्यापार, उद्योग-धंधे सुदृढ़ हो चुके थे। जमींदारी-प्रथा स्थापित हो चुकी थी। ग़रीबों पर अमीरों का शोषण-चक्र बढ़ता जा रहा था। जमींदार और किसान, उद्योगपति और मज़दूर-वर्गों की यह विषमता स्पष्ट थी। देश के स्वतंत्रता-आंदोलन ने शोषण से मुक्ति की चेतना भी जगाई। जीवन के कटु यथार्थ से लोगों का हर दिन सामना हो रहा था। ऐसे में छायावादी कल्पना लोक की कविताओं के लिए अवकाश नहीं था। उधर रूस की सफल क्रांति से प्रेरित लेखकों ने अंतर-राष्ट्रीय स्तर पर प्रगतिवादी लेखक संघ की स्थापना की थी जिसकी शाखा भारत में भी खुली और 1936 में प्रेमचंद की अध्यक्षता में इसका प्रथम सम्मेलन संपन्न हुआ। इस विचार और आंदोलन से प्रेरित हिंदी के कवियों ने जो काव्य रचा वह प्रगतिवादी काव्य कहलाया।

मुख्य प्रवृत्तियाँ

सारा समाज दो वर्गों में बँटा है–शोषक (पूँजीपति) और शोषित (गरीब)। पूँजी के

टिप्पणी

प्रमुख विशेषताएँ :
1. देश की स्वतंत्रता की कामना
2. देश की अखंडता के प्रति विश्वास
3. नए जीवन-मूल्यों के प्रति विश्वास

असमान वितरण को समाप्त कर, वर्गहीन समाज की स्थापना के द्वारा ही विश्व में सुख-शांति लाई जा सकती है। साहित्यकार का कर्त्तव्य है कि वह अपने लेखन से ऐसी चेतना जगाए जिससे शोषकों के विरुद्ध जनता में क्षोभ और आक्रोश पैदा हो, वह क्रांति करे और इस शोषण-चक्र को निर्मूल करे। इस दृष्टि से हिंदी में जो काव्य लिखा गया, वह क्रांति की ललकार से भरा और वर्तमान जीवन की आर्थिक कठिनाइयों तथा शोषण के चित्र उकेरने वाला था। निराला और पंत ने भी बाद में ऐसी कविताएँ लिखीं। प्रगतिवादी कवियों में **नागार्जुन** प्रमुख हैं :

फटे वस्त्र हैं, घर से बाहर निकलेगी कैसे लजवंती।
शर्म न आती, मना रहे वे महँगाई की रजत जयंती।।

केदारनाथ अग्रवाल ने उतनी ही धारदार प्रगतिवादी कविताएँ लिखीं, किंतु वे प्रकृति के अत्यंत सुरम्य चित्र भी उकेरते रहे :

मैंने उसको/जब जब देखा/लोहा देखा
लोहा जैसा/तपते देखा/गलते देखा/ढलते देखा
('वीरांगना' स्त्री पर कविता)

X X X

धूप चमकती है चाँदी की साड़ी पहने
मैके में आई बेटी की तरह मगन है
(प्रकृति का चित्र)

क्रांति के लिए ललकार का यह स्वर देखें:

गा कोकिल, बरसा पावक कण
नष्ट-भ्रष्ट हो जीर्ण-पुरातन
(पंत)

पंत की ही नारी-मुक्ति का आह्वान करनेवाली पंक्तियाँ :

मुक्त करो नारी को मानव, मुक्त करो नारी को,
युग-युग की निर्मम कारा से, सजनि, सखी, प्यारी को।

प्रगतिवादी कवि साहित्य को मनोरंजन की वस्तु नहीं मानता, उसे उपयोगिता की तुला पर तौलता है। प्रगतिवादी काव्य की भाषा लोकग्राहक है। छंदों में लोकगीतों का प्रभाव है। वस्तुतः शिल्प-शैली से अधिक, इन कवियों का ध्यान विषय पर केंद्रित है। 'सुंदर' की अपेक्षा यह कविता 'सत्यं' और 'शिवं' की है।

प्रगतिवादी कवियों ने थोथे आदर्शवाद और रूढ़ियों से ध्यान हटाकर वास्तविक यथार्थवाद की ओर ध्यान केंद्रित किया तथा कविता को जीवन के निकट ले आए। यत्र-तत्र रूस-चीन के खुले समर्थन आदि के कारण प्रगतिवादी कवियों ने सपाटबयानी भी की है:

लाल रूस का दुश्मन, साथी, दुश्मन हिंदुस्तान का

ऐसी कविताओं में प्रगतिवाद की सही सामर्थ्य नहीं दिखाई पड़ती।

प्रगतिवादी काव्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ :
1. पूँजी के असमान वितरण के विरोध में शोभितों में जन-चेतना जगाना।
2. कहीं-कहीं कविता शुद्ध प्रचार बन गई।
3. प्रकृति के सुंदर चित्र भी मिलते हैं।
4. कविता को मनोरंजन की नहीं, उपयोग की वस्तु मानते हैं।
5. भाषा में सरलता
6. छंदों में लोकगीतों का प्रभाव।
7. कविता को जीवन के निकट ले आया।

6. प्रयोगवाद और नई कविता

सन् 1943 में अज्ञेय (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय) के संपादन में सात कवियों (मुक्तिबोध, नेमिचंद्र जैन, भारतभूषण अग्रवाल, गिरजाकुमार माथुर, प्रभाकर माचवे, रामविलास शर्मा और अज्ञेय) का सम्मिलित संकलन 'तार सप्तक' के नाम से छपा। यहीं से प्रयोगवाद का आरंभ माना जाता है। पुनः सन् 1951 में अज्ञेय ने सात अन्य कवियों (भवानीप्रसाद मिश्र, शकुंत माथुर, हरिनारायण व्यास, शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय और धर्मवीर भारती) का संकलन 'दूसरा सप्तक' के नाम से संपादित किया। इस संकलन की भूमिका में अज्ञेय ने लिखा कि प्रयोग का कोई वाद नहीं है.........प्रयोग अपने आप में इष्ट नहीं है, वह साधन है, सत्य को जानने का। अर्थात् नए-नए प्रयोगों के द्वारा कवि कविता के सत्य तक पहुँच सकता है।

वस्तुतः प्रयोगवादी जीवन-मूल्यों को नई दृष्टि से देखने के आग्रही हैं। उन्होंने व्यक्ति, उसके सुख-दुख, आशा-आकांक्षा को अधिक महत्त्व दिया। यूरोपीय साहित्य और वहाँ के आंदोलनों से भी ये कवि प्रभावित रहे, विशेषकर टी.एस. इलियट से। मनोवेत्ता फ्रायड का भी प्रभाव इन पर है। शैली-शिल्प में नए प्रयोग करने के कारण ही इस धारा का नाम प्रयोगवाद पड़ा। प्रयोगवादी कवि व्यक्ति की विकृतियों को दमित वासना, अतृप्त कामना, कुंठा का भंडार मानता है। वर्तमान इनके लिए पीड़ा, त्रास, निराशा से भरा है। विज्ञान, बुद्धिवाद और तर्क के प्रभाव में आकर वे भावनाओं की अनदेखी करते हैं। प्रयोगवादी कवि मानता है कि उसने जिस सत्य का अनुभव किया है वह नया है और उसे पुराने भाषा—शब्दों, उपमानों, प्रतीकों—के सहारे स्पष्ट नहीं किया जा सकता। अतएव वे अभिव्यक्ति के नए-नए ढंग खोजते हैं, जैसे विराम-चिह्नों का मनचाहा प्रयोग, छोटे-बड़े अक्षर, आड़ी-तिरछी रेखाएँ, छोटी-बड़ी काव्य-पंक्तियाँ, व्याकरण के नियमों का बेपरवाही से प्रयोग। यही कारण है कि प्रारंभ में इस कविता को समझने में लोगों को कठिनाई हुई। परंपरागत छंद-विधान की जगह इन्होंने विषयानुकूल नई गद्य-लय का भी प्रयोग किया।

'संघर्ष-क्रांत' मानव की स्थिति का चित्रण मुक्तिबोध इस प्रकार से करते हैं:

दिल के भीतर गर्म ईंट है, गर्म ईंट है
जले हुए ठूँठ के तने सी स्याह पीठ है
जमाने की जीभ निकल पड़ी है।

सन् 1959 में अज्ञेय ने ही जब नए सात कवियों (प्रयागनारायण त्रिपाठी, कीर्ति चौधरी, मदन वात्स्यायन, केदारनाथ सिंह, कुँवर नारायण, विजयदेव नारायण साही और सर्वेश्वरदयाल सक्सेना) का संकलन संपादित किया तब तक नई कविता स्थापित हो चुकी थी।

प्रयोगवाद और **नई कविता** के दौर ऐसे घुले-मिले हैं कि इनके सहयोगी कवि इनमें से एक से अधिक को छूते-काटते चलते हैं और इनकी विचारधारा में भी कोई मूलभूत अंतर नहीं दिखलाई पड़ता।

सन् 1954 में 'नयी कविता' (संपादक : जगदीश गुप्त और रामस्वरूप चतुर्वेदी) पत्रिका का प्रकाशन हुआ। चाहें तो यहीं से प्रयोगवाद से अलग नई कविता की पहचान कर सकते हैं। नई कविता में मनुष्य और उसके समग्र अनुभव को पकड़ने का यत्न हुआ है। नई कविता की पहली पहचान हैं सर्वेश्वरदयाल सक्सेना :

टिप्पणी

सन् 1954 में 'नयी कविता' पत्रिका के प्रकाशन के आसपास से नई कविता आंदोलन का प्रारंभ हुआ।

और अब छीनने आये हैं वे
हमसे हमारी भाषा
यानी हमसे हमारा रूप
जिसे हमारी भाषा ने गढ़ा है

नई कविता के कवियों का मानना था कि अनुभूतियों के नए रचना-विधान को परंपरागत या रूढ़ भाषा-शैली में नहीं बाँधा जा सकता। इस तरह से हिंदी को नया भाषिक तेवर और नया मुहावरा मिला। अधिकांश कवियों ने नई कविता को प्रयोगवाद की विरासत अथवा उसका विकसित रूप माना है।

मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी वर्ग की मानसिक दुविधा का चित्रण अजित कुमार ने इस प्रकार किया है :

क्या करे नया लेखक?
पूँजी की, महलों की, सट्टे की प्रशस्ति करे?
बदले में सिल्क का कुर्ता, सोलापुरी धोती पहन
खुद भी चमक-दमक भरी सड़कों पर मौज करे?
सजे बजे ड्राइंग रूमों में कविता बनाये,
गुनगुनाये, गीत गाये।
नया लेखक क्या करे?

आगे चलकर नई कविता नाम ही प्रचलित हुआ और इस कविता की मोटे तौर पर दो धाराएँ मानी गईं : एक जिसमें व्यक्ति सत्य प्रमुख था तथा जिसका प्रतिनिधित्व अज्ञेय करते हैं और दूसरी जो सामाजिक प्रतिबद्धता को प्रमुखता देती है तथा जिसका प्रतिनिधित्व मुक्तिबोध करते हैं। अज्ञेय की 'नदी के द्वीप', 'साँप', 'असाध्यवीणा', 'कलगी बाजेर की' तथा मुक्तिबोध की 'ब्रह्मराक्षस', 'भूल-गलती', 'अंधेरे में' आदि कविताओं ने बहुत प्रसिद्धि पाई।

7. समकालीन (आज की) कविता

नई कविता-आंदोलन के बाद कई छोटे-बड़े काव्यांदोलन चलाए गए और नए-नए नामों से कविता को पुकारा गया, जैसे युयुत्सावादी कविता, अकविता आदि किंतु कोई भी आंदोलन कविता का स्वतंत्र स्वरूप गढ़ने में कामयाब नहीं हुआ और दीर्घजीवी भी नहीं रहा। आज हिंदी में ढेर सारी कविताएँ लिखी जा रही हैं और अच्छी कविताएँ भी लिखी जा रही हैं। किंतु आज का कवि किसी विशेष वाद से बँधा हुआ नहीं है। कविता की एक जनवादी धारा अवश्य है, किंतु वह भी आज की कविता की कई-कई धाराओं में से एक है।

आज की कविता के लिए कोई विषय अछूता नहीं है। मामूली से मामूली विषय पर भी प्रभावशाली कविताएँ लिखी जा रही हैं। वस्तुतः आज की कविता की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ हैं– विषय-वैविध्य तथा मामूलीपन के भीतर की असाधारणता। भाषा के स्तर पर आज की कविता में बातचीत की सहजता या वार्तालाप की लय का होना महत्त्वपूर्ण है। आज के कवि की प्रतिबद्धता भावों की अभिव्यक्ति के प्रति है। आज की कविता में छंदों की वापसी भी हुई है। नई कविता के दौर में नवगीत आंदोलन चला था और तब शंभूनाथ सिंह, नईम, वीरेंद्र मिश्र, उमाकांत मालवीय, माहेश्वर, रमानाथ अवस्थी जैसे अनेक गीतकार सक्रिय थे। आज फिर गीतों को प्रतिष्ठा मिली है।

टिप्पणी

यों तो भारतेंदु, निराला, जानकीवल्लभ शास्त्री तक ने गज़लें लिखी हैं किंतु दुष्यंत कुमार के गज़ल-संग्रह 'साये में धूप' की सफलता के बाद हिंदी में गज़ल करने वाले कवियों की संख्या काफी बढ़ी है। दुष्यंत कुमार के एक शेर पर ध्यान दीजिए :

कोई हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

प्रयोगवादी दौर के कवियों में रघुवीर सहाय, कुँवर नारायण आदि को आज की कविता में भी सम्मान की दृष्टि से देखा गया। समकालीन कवियों की सूची लंबी है, किंतु धूमिल, अशोक वाजपेयी, भगवत रावत, ज्ञानेंद्रपति, राजेश जोशी, स्वप्निल श्रीवास्तव, गीतकार यश मालवीय, अनामिका, गोरख पांडेय, अरुण कमल आदि महत्त्वपूर्ण हैं। आज के कवियों में व्यंग्य-स्वर की भी प्रधानता मिलती है। तद्‌भव शब्दों की प्रधानता वाली भाषा के प्रति आज के कवि आग्रही हैं। यत्र-तत्र सपाटबयानी भी दिखती है। कविता की भाषा का मुहावरा तय करने का श्रेय प्रायः धूमिल और रघुवीर सहाय को दिया जाता है। इस संदर्भ में धूमिल की कुछ पंक्ति देखिए :

एक आदमी है जो रोटी बेलता है
एक आदमी है जो रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी और है जो न रोटी बेलता है न खाता है
वह रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूँ यह तीसरा आदमी कौन है?
मेरे देश की संसद इस पर मौन है।

आज की कविता संकलनों और पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हर दिन सामने आ रही है।

1943 में 'तार सप्तक' के प्रकाशन से प्रयोगवाद का प्रारंभ माना जाता है।

नए सत्य की अभिव्यक्ति के लिए नई शिल्प-शैली पर बल।

आज की कविता की मुख्य विशेषताएँ :

1. मामूलीपन के भीतर की असाधारणता
2. विषय-वैविध्य
3. वार्तालाप की लय
4. व्यंग्य-स्वर
5. दोहों-ग़ज़लों की लोकप्रियता
6. केवल भावाभिव्यक्ति के प्रति प्रतिबद्धता, अन्य कोई प्रतिबद्धता नहीं।
7. तद्‌भव शब्द-बहुल भाषा

पाठगत प्रश्न 25.9

1. निम्नलिखित वाक्यों के आगे उनकी स्थिति के अनुसार सही (√) या ग़लत (X) का निशान लगाइएः
   - (क) राष्ट्रप्रेम की भावना स्वतंत्रता के बाद के हिंदी के काव्य में ही पाई जाती है। ( )
   - (ख) दिनकर के काव्य में माधुर्य और कोमल कल्पना है। ( )
   - (ग) रामेश्वर शुक्ल, 'अंचल' तथा 'बच्चन' छायावादी कवि हैं। ( )
   - (घ) प्रगतिवादी कविता में पूँजीपतियों का पक्ष लिया गया है। ( )
   - (ङ) 'तार सप्तक' में पाँच कवियों की कविताएँ संकलित हैं। ( )
   - (च) नई कविता में व्यक्ति का कम और समाज का चित्रण अधिक है। ( )
   - (छ) आज की कविता की एक मुख्य विशेषता मामूलीपन के भीतर की असाधारणता है। ( )
2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :
   - (क) राष्ट्रीय काव्यधारा के तीन मुख्य स्वर कौन-कौन से थे?
   - (ख) राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के दो प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।
   - (ग) आधुनिक हिंदी काव्य में नारी के प्रति कवियों का क्या दृष्टिकोण रहा है?

टिप्पणी

(घ) प्रयोगवादी कविता का आरंभ किस पुस्तक से माना जाता है? उसके संपादक कौन थे?

(ङ) आज की कविता के किंहीं दो प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।

25.7 आपने क्या सीखा

हिंदी साहित्य के इतिहास को चार खंडों में बाँटकर पढ़ते हैं :

1. आदिकाल (वीरगाथा काल) 1000 ई. से 1350 ई.
2. पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) 1350 ई. से 1650 ई.
3. उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल या श्रृंगार काल) 1650 ई. से 1850 ई.
4. आधुनिक काल (इस काल में हिंदी में गद्य में भी लिखा जाने लगा इसलिए इसे गद्यकाल भी कह देते हैं) 1850 ई. से।

आदिकाल में सिद्धों, नाथों, जैनियों ने अपने-अपने धार्मिक विश्वासों के प्रचार के लिए काव्य रचे। क्षत्रिय राजाओं के दरबारी कवियों ने अपने आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा में वीरकाव्य लिखे, जो मुख्यतः 'रासो' ग्रंथों के नाम से जाने जाते हैं। खुसरो और मैथिली के कवि विद्यापति भी इसी काल में हुए।

पूर्व मध्यकाल में निर्गुण और सगुण भक्ति की कविताएँ लिखी गईं। कुछ निर्गुण कवियों ने ज्ञान के सहारे निर्गुण ब्रह्म का उपदेश दिया। ऐसे कवियों को निर्गुण ज्ञानाश्रयी कवि या संत-साहित्य के रचयिता कहते हैं। ये कवि हैं – कबीर, नानक, रैदास आदि। सूफी कवियों (इसलाम के एकेश्वरवाद के साथ वेदांत के ब्रह्मज्ञान और लोक-संस्कृति को मिलाकर प्रचलित लोक कथाओं के आधार पर प्रेमकथाएँ लिखीं और प्रेम के सहारे निर्गुण ब्रह्म की प्राप्ति का मार्ग बताया। इन्हें प्रेममार्गी या प्रेमाश्रयी कवि कहते हैं। ऐसे कवियों में मुख्य हैं कुतुबन, मंझन, मलिक मुहम्मद जायसी। सगुण भक्त कवियों में से कुछ ने कृष्ण भक्ति का आधार ग्रहण किया, कुछ ने राम भक्ति का। कृष्णभक्ति धारा के प्रसिद्ध कवि हैं- सूरदास, नंददास आदि। रामभक्तिधारा के सर्वप्रमुख कवि हैं - 'रामचरितमानस' के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास।

भक्तिकाल के बाद के काल को रीतिकाल या श्रृंगारकाल कहते हैं। राजाओं के दरबारों में रहनेवाले कवि अपने राजाओं को प्रसन्न करने के लिए श्रृंगारिक कविताएँ लिख रहे थे। कुछ कवियों ने अपने पांडित्य प्रदर्शन के लिए लक्षण-ग्रंथ भी रचे। इन्हें रीतिबद्ध कवि कहते हैं, जैसे पद्माकर। कुछ कवियों ने लक्षण-ग्रंथ तो नहीं रचे किंतु उनका हर दोहा किसी न किसी लक्षण का उदाहरण है। ऐसे कवियों को रीतिसिद्ध कहा गया, जैसे बिहारीलाल। कुछ कवि ऐसे भी हैं जिन्होंने रीतियों का अनुसरण नहीं किया। इन्हें रीतिमुक्त कवि कहा गया, जैसे आलम, बोधा घनानंद। भूषण ने वीर-रसात्मक कवित्त लिखे तो गिरिधर तथा वृंद ने नीतिपरक काव्य रचा।

मुग़लों को अपदस्थ कर जब अंग्रेज़ों ने भारत का शासन-सूत्र सँभाल लिया और उनका शोषण-चक्र शुरू हुआ तो देश में नई राजनीतिक-सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना जगी और इस पुनर्जागरण के स्वर हिंदी कविता में भी सुनाई पड़ने लगे। इस काल को आधुनिक काल कहा गया। चूँकि छापेखाने वगैरह आ जाने, शिक्षा की नई प्रणाली शुरू होने और ज्ञान-विज्ञान के नए विषयों से हमारा परिचय बढ़ता जा रहा था अतएव आधुनिक काल में हिंदी में गद्य-लेखन भी होने लगा। इसीलिए आधुनिक काल को गद्य काल भी कहा गया है। आधुनिक काल का प्रारंभ 1850 ई. से होता है। आधुनिक काल

के पहले अवधी, ब्रजभाषा आदि में काव्य रचना होती थी। आधुनिक काल में खड़ी बोली का प्रयोग होने लगा और परंपरागत विषयों और काव्य-शैलियों से हटकर नवीनता की ललक दिखलाई पड़ने लगी। इस काल की कविताओं को निम्नलिखित खंडों में बाँटकर पढ़ते हैं :

(i) भारतेंदु युग (देशभक्ति, समाज-सुधार का प्रमुख स्वर)
(ii) द्विवेदी युग (मानवतावाद, आदर्श, प्रकृति-चित्रण की कविता। 'हरिऔध', गुप्त जी आदि कवि)
(iii) छायावाद (प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी)। वैयक्तिकता, सौंदर्य और प्रेम का आंतरिक पक्ष, रहस्यवाद, मानवतावाद और भाषा-शैली तथा छंद में युगांतर
(iv) राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य (नवीन, माखनलाल चतुर्वेदी, दिनकर आदि कवि)
(v) छायावादोत्तर कवि तथा प्रगतिवाद (बच्चन, अंचल, सुमन, नागार्जुन, केदार, आदि। मार्क्सवाद से प्रेरित कविता)
(vi) प्रयोगवाद तथा नई कविता
(vii) आज की कविता

(अज्ञेय द्वारा संपादित 'तारसप्तक' से प्रयोगवाद का प्रारंभ, उसका उत्तर चरण नई कविता आज की कविता किसी वाद में बँधी नहीं। साधारण से साधारण विषय पर कविता-लेखन की प्रवृत्ति। व्यंग्य स्वर आदि प्रमुख कवि धूमिल, रघुवीर सहाय आदि।

25.8 पाठांत प्रश्न

1. आदिकाल में लिखी गई विभिन्न प्रकार की कविताओं का परिचय दीजिए।
2. भक्तिकाल की कविता की विशेषताएँ बतलाइए।
   भक्तिकाल की विविध धाराओं का परिचय देते हुए प्रत्येक के दो–दो कवियों का नामोल्लेख कीजिए।
3. रीतिकाल में किस प्रकार की कविता लिखी गई?
4. आधुनिक काल में भारतेंदु के महत्त्व का परिचय दीजिए।
5. द्विवेदी युगीन काव्य के विषय तथा भाषा-शैली की दृष्टि से मूल्यांकन कीजिए।
6. छायावादी काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
7. 'प्रगतिवादी काव्य शोषितों के प्रति सहानुभूति का काव्य है।' सोदाहरण समझाइए।
8. नयी कविता की विशेषताएँ बताइए।
9. आज की कविता के स्वरूप पर विचार कीजिए।

25.9 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

25.1 1. (X) 2. (√) 3. (√) 4. (√) 5. (√) 6. (√) 7. (X)
8. (X) 9. (X) 10. (√)

25.2 1. (√) 2. (√) 3. (√) 4. (√)
2. (क) भक्ति (ख) अवतार (ग) निर्गुण (घ) भाव

टिप्पणी

25.3 1. (क) हाँ (ख) नहीं (ग) नहीं (घ) हाँ
2. (क) राम और कृष्ण की उपासना (ख) दास्य (ग) तुलसीदास
(घ) नवधा–अर्थात् नौ प्रकार की

25.4 1. (√) 2. (√) 3. (√) 4. (√) 5. (X)

25.5 1. (क) रीतिकालीन (ख) रीतिकालीन (ग) रीति–पद्धति (घ) शृंगार
2. (क) नहीं (ख) हाँ (ग) हाँ (घ) हाँ
3. (क) रीतिबद्ध (ख) प्रेम-भावना (ग) आचार्य/कवि
(घ) दोहा-कवित्त-सवैया (ङ) ब्रजभाषा

25.6 1. (क) X (ख) √ (ग) √ (घ) √
2. (क) 1850–1900
(ख) देशभक्ति और राजभक्ति
(ग) ब्रजभाषा
(घ) इतिवृत्तात्मकता
(ङ) भारतेंदु हरिश्चंद्र
3. (क) भारतेंदु जी के महत्त्वपूर्ण कार्यों के कारण
(ख) राजनीतिक अत्याचार और आर्थिक शोषण
(ग) आदर्श और यथार्थ

25.7 1. (क) X (ख) √ (ग) X (घ) √ (ङ) √
2. (क) देशप्रेम, समाज-सुधार, मानवतावाद, नीति-आदर्शों की प्रतिष्ठा, सामान्य जन के दुख-दर्द का चित्रण (कोई तीन)
(ख) नाथूराम शर्मा, श्रीधर पाठक, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी (कोई तीन)
(ग) प्रियप्रवास, साकेत

25.8 1. (क) X (ख) √ (ग) √
2. (क) प्रकृति और नारी के कोमल रूप का चित्रण, प्रेम की विविध अनुभूतियों का चित्रण, वेदना के चित्र, कवियों की निजी अनुभूतियों का वर्णन, कल्पना का प्रयोग, आध्यात्मिकता का पुट (कोई तीन)
(ख) कोमलता, लाक्षणिकता, प्रतीकों का प्रयोग, गीति-तत्त्व की प्रमुखता (कोई दो)
(ग) जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा

25.9 1. (क) X (ख) X (ग) X (घ) X (ङ) X
(च) X (छ) √
2. (क) राष्ट्रप्रेम, प्राचीन संस्कृति का गौरव-गायन तथा विद्रोह का स्वर
(ख) रामधारी सिंह 'दिनकर', बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
(ग) नारी के प्रति सहानुभूति तथा उसे सभी प्रकार के बंधनों से मुक्त करने का।
(घ) तारसप्तक। सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय।
(ङ) धूमिक, अशोक वाजपेयी, ज्ञानेंद्रपति, राजेश जोशी (कोई दो)